वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :4 अंक : 141 | शनिवार 14 सितम्बर 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

पधारो म्हारे देसः जापान के निवेशकों को मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा का राजस्थान में निवेश का आमंत्रण

ओसाका में इन्वेस्टर्स मीट का हुआ आयोजन, जापानी कंपनियों डाइकिन और एनआईडीईसी कॉरपोरेशन के अधिकारियों ने राजस्थान सरकार के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की

"राइजिंग राजस्थान" ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 के जरिए प्रदेश में निवेश आकर्षित करने के लिए मुख्यमंत्री के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल की जापान यात्रा पूरी

जयपुर. शाबाश इंडिया

अपनी तीन दिवसीय जापान यात्रा के अंतिम दिन मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने ओसाका में आयोजित इन्वेस्टर्स मीट में भाग लिया और जापानी निवेशकों से राजस्थान में अपने मौजूदा व्यवसायों का विस्तार करने और नए उद्यम स्थापित करने का आग्रह किया। इसके अलावा मुख्यमंत्री के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल ने दो प्रमुख जापानी कंपनियों - डाइकिन और एनआईडीईसी कॉरपोरेशन - के अधिकारियों के साथ भी चर्चा की। इन कंपनियों के राज्य के नीमराणा जापानी निवेश जोन में पहले से ही उपक्रम हैं। ओसाका निवेशकों की बैठक में राज्य में मौजूद कारोबार की संभावनाओं की बात करते हुए मुख्यमंत्री शर्मा ने राजस्थान के प्रति विश्वास जताने के लिए जापानी निवेशकों को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर बोलते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, मैं जापानी निवेशक समुदाय से राजस्थान में अपना विश्वास बनाए रखने और भारत और जापान के बीच मौजूदा साझेदारी को और मजबूत बनाने का आग्रह करता हूं। राजस्थान में नीमराणा जापानी निवेश क्षेत्र में लगभग 50 जापानी कंपनियों का सफल संचालन राज्य की व्यापार करने में आसानी और व्यापार के माहौल को बेहतर बनाने की स्पष्ट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। आने वाले दिनों में हम एमएसएमई नीति, ''एक जिला एक उत्पाद'' नीति, डेटा सेंटर नीति जैसी कई नए निवेशक-अनुकूल नीतियों को शुरू करने जा रही है, ताकि राज्य निवेशकों और व्यवसायों के लिए एक प्रमुख आकर्षक स्थान के रूप में उभर सके। ओसाका में इन्वेस्टर्स मीट के बाद मुख्यमंत्री के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल ने एक अन्य जापानी कंपनी एनआईडीईसी कॉर्पोरेशन के प्रतिनिधियों से मुलाकात की और प्रदेश में सरकार द्वारा उठाए जा रहे महत्वपूर्ण व्यापार-अनुकूल परिवर्तनों के बारे में जानकारी दी। एनआईडीईसी कॉरपोरेशन के अधिकारियों ने राज्य द्वारा व्यावसायिक माहौल को अच्छा बनाने के लिए उठाए जा रहे प्रभावशाली कदमों की सराहना की और आश्वासन दिया कि कंपनी की दीर्घकालिक योजनाओं में राजस्थान भी शामिल है। इसके अलावा, ओसाका में अनिवासी राजस्थानी समुदाय (एनआरआर) के लोगों ने भी राजस्थान सरकार के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की। समुदाय के सदस्यों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने जापान में तकनीकी नवाचारों की शुरूआत करने में अप्रवासी राजस्थानी समुदाय की भूमिका के बारे में प्रसन्नता व्यक्त की और उनसे जापान और राजस्थान के बीच एक सेतु की भूमिका निभाने का अनुरोध किया। इसके अलावा जापानी संस्कृति से मिली सीख को राज्य के लोगों से भी साझा करने का आग्रह करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि अप्रवासी राजस्थानी अपनी माटी में भी नए व्यवसाय लगाने का प्रयास करें। 'राइजिंग राजस्थान' ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 के बारे में बात करते हुए, ओसाका-कोबे में भारत के महावाणिज्यदूत चंद्रू अप्पार ने कहा, मैं रोड शो को मिले जबरदस्त समर्थन देखकर बेहद खुश हूं। निवेशकों के रोड शो में राजस्थान के मुख्यमंत्री की मौजूदगी राज्य की 'इज ऑफ डूइंग बिजनेस' के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

दसलक्षण महापर्व (पर्यूषण) उत्तम तप

मन की शुद्धि सिखाता है-उत्तम तप धर्म

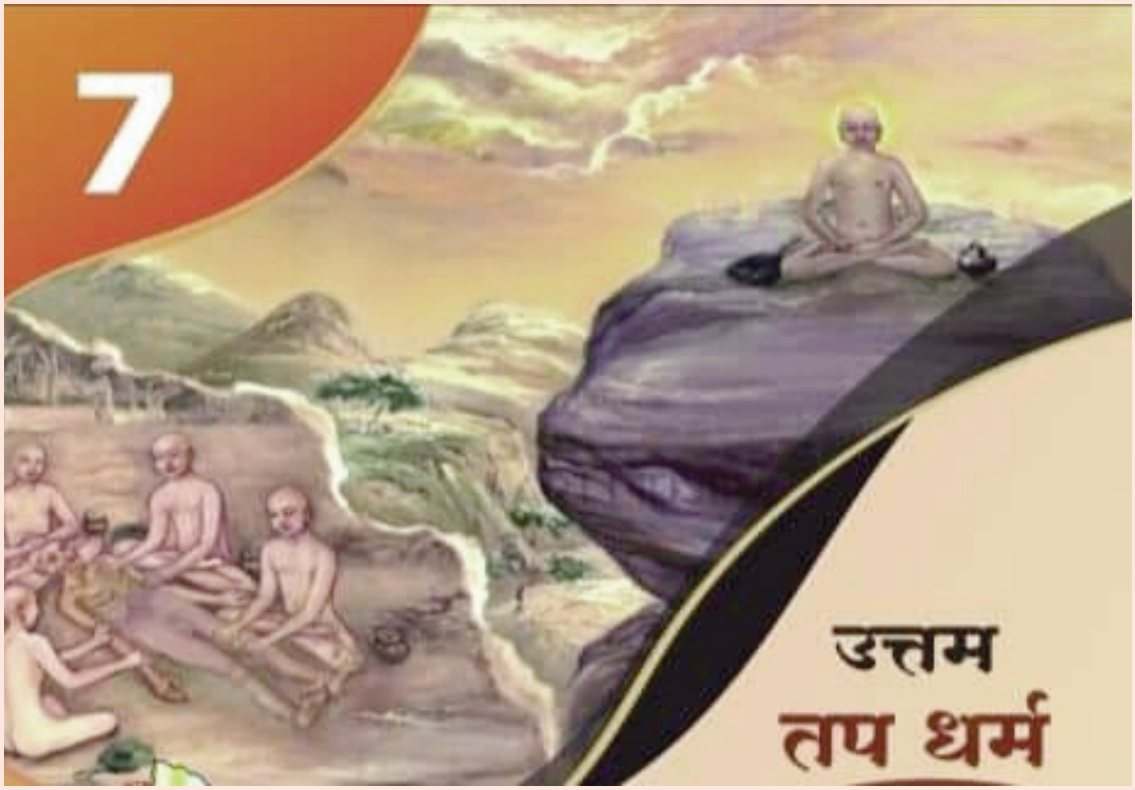

(तप से सभी कर्मों का नाश होता है)

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

आज दसलक्षण महापर्व के अंतर्गत सातवां दिन उत्तम तप धर्म की आराधना का है। तप वही है जहाँ विषयों का निग्रह हो।'इच्छानिरोधस्तपः॥ अर्थात इच्छाओं का निरोध/अभाव/नाश करना, तप है। वह तप जब आत्मा के श्रद्धान (सम्यग्दर्शन) सहित/पूर्वक होता है, तब ''उत्तम तप धर्म'' कहलाता है। प्रवचनसार जी में भी आचार्य भगवन यही कहते हैं कि – भावों में समस्त इच्छाओं के त्याग से स्वस्वरूप में प्रतपन करना, विजयन करना सो तप है। कहने का तात्पर्य यही है कि जिन भावों से मोह-राग-द्वेष रूपी मैल और शुद्ध ज्ञान दर्शन मय आत्मा भिन्न-भिन्न हो जाये वही सच्चा तप है। एक मात्र तप ही वह कारण है जो कर्म रूपी शिखर को भेदने में समर्थ हैं। यद्यपि सम्यक प्रकार से तप तो मुनिराजों को ही होता है , लेकिन श्रावकों को भी शक्ति अनुसार इन तपों की भावना भानी चाहिए। क्यों कि संयम की तरह तप भी चारों गतियों में से मात्र मनुष्य गति में ही संभव है। नरक और तिर्यंच गति में तो दुख की प्रधानता है , लेकिन देवगति में तो जीव को सर्वसुविधायें मिलती है , लेकिन फिर भी वे जीव उत्तमतप धारण करने के लिये तरसते हैं। जिस प्रकार अग्नि का एक तिनका भी बड़े से बड़े घास के ढ़ेर को जला देता है , उसी प्रकार सम्यक तप पूर्व संचित कर्मों के ढ़ेर को जलाकर भस्म कर देता है। संसार शरीर और भोगों से विरक्ति भी तप से ही होती है।

बारस अणुवेक्खा ग्रंथ में तप का स्वरूप बताते हुये आचार्य कहते हैं ''पाँचों इन्द्रियों के विषयों तथा चारों कषायों को रोककर शुभध्यान की प्राप्ति के लिये जो अपनी आत्मा का विचार करता है, उसके नियम से तप होता है।'' धवला जी में आचार्य वीरसेन स्वामी कहते हैं कि तिण्णं रयणाणमाविब्भावट्ठमिच्छाणिरोहो। अर्थात तीनों रत्नों को प्रगट करने के लिये इच्छाओं के निरोध को तप कहते हैं। मन की शुद्धि सिखाता है-उत्तम तप धर्म। मलीन वृत्तियों को दूर करने के लिए जो बल चाहिए, उसके लिए तपस्या करना।तप का मतलब सिर्फ उपवास, भोजन नहीं करना सिर्फ इतना ही नहीं है बल्कि तप का असली मतलब है कि इन सब क्रिया के साथ अपनी इच्छाओं और ख्वाहिशों को वश में रखना। तप का प्रयोजन है मन की शुद्धि ! मन की शुद्धि के बिना काया को तपाना या क्षीण करना व्यर्थ है। तप से ही आध्यात्म की यात्रा का ओंकार होता है। अपनी इच्छाओं को वश में रखना ही सबसे बड़ा तप है। जिन भावों से मोह-राग-द्वेष रूपी मैल और शुद्ध ज्ञान दर्शन मय आत्मा भिन्न-भिन्न हो जाये वही सच्चा तप है। एक मात्र तप ही वह कारण है जो कर्म रूपी शिखर को भेदने में समर्थ हैं। तप के भेद-अंतरंग और बहिरंग के भेद से तप के बारह भेद हैं। **अंतरंग तपः** प्रायश्चित, विनय , वैयावृत्य , स्वाध्याय , व्युत्सर्ग और ध्यान।

जिन भावों से मोह-राग-द्वेष रूपी मैल और शुद्ध ज्ञान दर्शन मय आत्मा भिन्न-भिन्न हो जाये वही सच्चा तप है। एक मात्र तप ही वह कारण है जो कर्म रूपी शिखर को भेदने में समर्थ हैं।

बहिरंग तपः अनशन, अवमौदर्य, वृत्ति परिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्त शय्यासन , कायक्लेश।

तप की महिमा इतनी है, कि सुरराज (इंद्र) भी इसको करने के लिए लालायित रहते हैं क्योंकि यह कर्म-रूपी शिखर (पर्वत) को तोड़ने के लिए वज्र के समान है। जिस प्रकार बिना बर्तन तपे दूध गर्म नहीं होता उसी प्रकार बिना बाह्य तप के अन्तरंग शुद्धि नहीं होती।जिस प्रकार अग्नि से तपाया गया स्वर्ण पाषाण शुद्ध हो जाता है, उसी प्रकार कर्ममल से मलिन आत्मा तप रुपी अग्नि से शुद्ध हो जाता है। यह जन्म मौज-मस्ती आदि के लिए नहीं, जन्म-जन्म के दुखों से मुक्ति की प्राप्ति की तैयारी करने के लिए मिला है। यदि इसे यूँ ही गँवा दिया, तो फिर से इसकी प्राप्ति कठिन है और फिर अनंत काल के लिए संसार में रुलना पड़ेगा। अतः शीघ्र ही ''उत्तम तप धर्म'' धारण करने योग्य है। प. दोलतराम जी ने लिखा है - कोटि जन्म तप तपे ज्ञान बिन कर्म झरे जे ज्ञानी के छीन माही त्रिगुप्ति ते कर्म सहज टरे जे। तप की महिमा अपरंपार है मुक्ति जब भी मिलेगी तपस्या से ही मिलेगी । तप के पीछे रहस्य छुपा है जो हमारे एक एक विकार को दूर कर दे वही है तपस्या।

जाप मंत्र : ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय नमः

संयमित जीवन अनावश्यक कठिनाईयों का उत्तम समाधान, यही उत्तम संयम धर्म

सुगन्ध दशमी पर जैन मंदिर सुगन्ध से महक उठे

संजय जैन बड़जात्या. शाबाश इंडिया

कामां, डीग। संयमित जीवन अनावश्यक कठिनाइयों का उत्तम समाधान है क्योंकि जिस जीवन में संयम है वहां आपाधापी व भाग दौड़ स्वतः ही समाप्त हो जाती है और जीवन सरलता सदविचारों व सदाचार के साथ व्यतीत होने लगता है। उत्तम संयम धर्म इसी दिशा में इंगित करता है की जीवन में कुछ ना कुछ नियम अवश्य पालन करना चाहिए क्योंकि छोटे-छोटे नियम एक दिन मोक्ष मार्ग का निमित्त बन जाते हैं। उक्त उद्गार शांतिनाथ दिगंबर जैन खंडेलवाल पंचायती मंदिर में उत्तम संयम धर्म पर रिंकू जैन के द्वारा व्यक्त किये गए। उन्होंने कहा कि जीवन मे भोजन का जितना महत्व है उतना ही महत्व नियम संयम का है। प्रेत्यक वयक्ति को शने शने संयम की साधना करनी चाहिए, जिससे इस भव के साथ पर भव भी संभल सके और भव भव के बंधन से मुक्त हो सके। पंच इंद्रियों पर नियंत्रण स्थापित करना सबसे बड़ा संयम है जो दिगंबर संतो के द्वारा बड़ी सरलता के साथ किया जाता है। मंदिर समिति के महामंत्री संजय जैन बड़जात्या ने बताया कि दसलक्षण पर्व के छठवें दिवस उत्तम संयम धर्म की आराधना की गई तो वहीं दोपहर को स्थानीय चारों मंदिरों में अष्ट कर्मों के नाश हेतु धूप का खेवन किया गया। जिससे समस्त मंदिरों में सुगंध ही सुगंध हो गई और लोग कह उठे की यही सुगंध दशमी है।महिलाओं द्वारा व्रत उपवास रख सुगन्ध दशमी की कथा का श्रवण किया गया।

विज्ञातीर्थ क्षेत्र पर धूप दशमी पर्व पर धूप दशमी विधान का हुआ आयोजन

गुन्सी, निवाई. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सहस्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी राजस्थान में पूज्य गुरु मां विज्ञाश्री माताजी ससंघ सान्निध्य में धूप दशमी व्रत के दिन उत्तम संयम धर्म की पूजन की गई। प्रतिक जैन सेठी ने बताया कि मंडल पर 22 अर्घ्य चढ़ाए गए। साथ ही धूप दशमी विधान का आयोजन भी बृजेंद्र मीना देवी अलवर वाले लाल कोठी जयपुर वालों की ओर से किया गया।सुगंधी दशमी व्रत की उद्यापन के उपलक्ष्य में भगवान की शांतिधारा,विधान एवं 10 प्रकार की वस्तुओं का दान करके उन्होंने अतिशय पुण्य का संचय किया। साथ ही पूज्य गुरुमां का आशीर्वाद भी उन्हें प्राप्त हुआ। विज्ञातीर्थ क्षेत्र पर हो रहे पुनः चमत्कार के बाद प्रतिक जैन सेठी ने बताया की आज भगवान की शांतिधारा करने का सौभाग्य कमलचंद सेठी मुंबई,अशोक रांवका रुपनगढ़,राजेश जैन दिल्ली,अशोक कासलीवाल जयपुर,शकुंतला शाह मालवीय नगर जयपुर,सुशीला देवी अभय कुमार पाटनी कलकत्ता सपरिवार ने प्राप्त किया। तत्पश्चात भक्तामर दीपार्चना करने का सौभाग्य इंद्रादेवी झिराना वाले निवाई एवं ओमप्रकाश ललवाड़ी वाले निवाई सपरिवार ने प्राप्त किया। भक्ति भाव के साथ भगवान की भक्ति में सभी भक्तगण तल्लीन हो गए। धूप दशमी पर्व पर धूप खेने के लिए भक्तों का विज्ञातीर्थ क्षेत्र पर तांता लगा हुआ था। अतिशयकारी तीर्थ क्षेत्र के दर्शन कर आप भी अपने जीवन में अतिशय पुण्य कमाए।

श्रद्धालूओं ने उत्तम संयम धर्म मनाकर सामूहिक धुप खेई

मनोज सोनी. शाबाश इंडिया

निम्बाहेड़ा। दिगम्बर जैन समाज ने दशलक्षण पर्व के अंतर्गत शुक्रवार को उत्तम संयम धर्म कि पूजा कर सुंगन्ध दशमी दिवस मनाते हुए सामूहिक धुप खेई। समाज के प्रवक्ता मनोज सोनी के अनुसार श्री आदिनाथ जिनालय और शान्तिनाथ जिनालय मे पंडित रोविल जैन एवं संयम जैन के सानिध्य मे चल रहे दशलक्षण अनुष्ठान के अंतर्गत आज छठवे दिवस पर उत्तम संयम धर्म कि पूजा आराधना कि गई इस अवसर पर शांतिधारा के लाभार्थी आदिनाथ जिनालय मे मनोज सोनी, जीवंधर पाटनी अमित सेठी, भरत जैन, विनीत जैन परिवार ने तथा श्री शान्तिनाथ जिनालय मे संजय ऋचा जैन, हरमेश विशाल सिंघवी, सुमतीलाल पटवारी,विनीत जैन, अनिल भोरावत, प्रेमचंद मोदी परिवार रहे। समाज के अध्यक्ष सुशील काला महामंत्री मनोज पटवारी कि अगुवाई मे आदिनाथ मन्दिर पर दशलक्षण पूजा अर्चना के पश्चात समाज जनों कि उपस्थिति मे सामूहिक रूप से धर्म ध्वजा फहराई गई। शुक्रवार सायं दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान मे धर्मावलम्बीयो ने अपने अष्ट कर्म विशमन हेतु श्री जिन प्रतिमाओ के समक्ष सामूहिक रूप से धुप खेई इधर पर्युषण पर्व के अंतर्गत रोजाना श्री जी के कलशभिषेक पूजा अर्चना त्याग व्रत कर बड़ी संख्या मे श्रद्धालूजन देवालयों मे चल रहे धार्मिक क्रियाओ मे भाग लेकर धर्मलाभ ले रहे हैं।

वेद ज्ञान

परिवर्तन में विश्वास...

मूल्यांकन की इच्छा मानव में निरंतर उपजती रहती है। अनजान व्यक्ति से मिलने पर क्षणभर में पूर्ण जीवन कथा जानने की छटपटाहट बड़ा संकट उत्पन्न करती है। सामने वाले को तत्काल प्रभाव में लेने की शीघ्रता समस्या बढ़ाती है। किसी से पलक झपकते ही सर्वस्व ज्ञात करने का सूत्र अभी तक ज्ञात नहीं है। जिसे जिस क्षेत्र का कोई ज्ञान नहीं रहता वह उसी क्षेत्र का यक्ष प्रश्न करता है। शिक्षा संस्थाओं में विषय अनिवार्यता के अलावा अनेक क्षेत्र में धनोपार्जन करने के लिए नए-नए मार्ग खोजे गए हैं। परिश्रमी की भीड़ से अलग सफलता का सार्थक मानदंड खोजने वाले नियम परिवर्तन में विश्वास रखते हैं। समान योग्यता वालों में किसी को सेवा का अवसर मिलने पर ऊंचाई का शिखर मिलते देर नहीं लगती। द्वार से भगाए गए तुलसी की भांति गुरु नरहरिदास की खोज में जीवन गुजर जाता है। वरदानदाता के लिए पैर पकड़कर पीछे खींचने वाले भस्मासुर बन जाते हैं। अपनी सीमा से अधिक कोई पचाना नहीं जानता। समय की आंच में तपकर निखरना सामान्य व्यक्ति के बस की बात नहीं है। पग-पग पर प्रतिकूलता से जूझने वाले लोहा लेते-लेते पारस पत्थर बन जाते हैं। कोयला अधिक ताप के दबाव में हीरा बनकर गौरवान्वित होता है। संकट सहते-सहते सामान्य मनुष्य महापुरुष बन जाता है। प्रशंसा का प्रोत्साहन कृतज्ञता बढ़ाता है। कृतज्ञता योग्यता पहचानने का तत्व है। उगते सूर्य को सभी प्रणाम करते हैं, पर अस्ताचल में जाते सूर्य को छठ पर्व में ही अर्घ्य चढ़ता है। पद का संबंध योग्यता से है। योग्य के स्थान पर अयोग्य को पद थोपकर योग्यता बढ़ाई जाती है। पद को भगवान बनाने के कारण अहंकार में वृद्धि होती है। प्रयास के बगैर प्राप्त फल अकर्मण्यता का पोषक है। अयोग्यता स्वयं से श्रेष्ठ को नकारती है। हाथी की पग-पग पर पूजा ही श्वान का दुख बढ़ाती है। दुर्जन सज्जनता को कायरता मानते हैं। सज्जन निश्छल परिश्रम में जीते हैं। प्रश्न पर अतार्किक प्रश्न करना मूर्खता का प्रतीक है। हर बात में प्रश्न अर्थ का अनर्थ करता है। भरत चित्रकूट में कहते हैं, 'योग्यता के अनुसार मुझे शिक्षा दी जाए।' योग्यता का अर्थ धन, पद नहीं, बल्कि त्याग है। औषधि की चर्चा नहीं, बल्कि औषधि रोगी के लिए उपयोगी है।

संपादकीय

बुजुर्गों का ख्याल बेहद जरूरी...

देश की आबादी में एक खासा हिस्सा उन लोगों का है, जो अपनी उम्र के साठ वर्ष पूरे कर चुके हैं। सामान्य जीवन और प्राकृतिक रचना के मुताबिक भी इस उम्र में व्यक्ति का शरीर आमतौर पर कमजोर होता जाता है और कई बार बीमारियों से भी घिर जाता है। ऐसे मानले असर देखे जाते रहे हैं, जिसमें किसी बुजुर्ग सदस्य को बीमारी में उचित इलाज सिर्फ इसलिए नहीं मिल पाता कि उनके पास चिकित्सक से परामर्श लेने और उपचार के लिए जरूरी खर्च का पैसा नहीं होता।

ऐसे में या तो उन्हें आसपास से ऋण लेकर अपना उपचार कराना पड़ता है या फिर उचित इलाज के बिना उनकी सेहत और खराब होती चली जाती है। इस लिहाज से देखें तो केंद्र सरकार ने जिस तरह आयुष्मान भारत योजना का विस्तार करते हुए सत्तर वर्ष या उससे ज्यादा उम्र के बुजुगों को भी पांच लाख रुपए तक के स्वास्थ्य बीमा के चावरे में लाने को मंजूरी है वह एक दूरगामी महत्व का फैसला है। सरकार के इस फैसले के धरातल पर उतरने के बाद देश के छह करोड़ से ज्यादा वरिष्ठ नागरिकों को इसका लाभ मिल सकेगा। यह छिपा नहीं है कि हमारे यहां बुजुगों की आबादी के सामने अपने जीवन और स्वास्थ्य को लेकर कैसी चुनौतियां रही हैं। यह भी जगजाहिर है कि उम्र बढ़ने के साथ और खासतौर साठ वर्ष या इससे ज्यादा की आयु में पहुंचने के बार ज्यादातर बुजुर्ग स्वास्थ्य संबंधी कई तरह की नीतियों से जूझते रहते हैं। मगर उनके जीवन का यही वह चौर है, जिसमें उनकी नियमित आय का जरिया अमूमन बंद हो चुका होता है। खासतौर पर जिन लोगों के पास संगठित क्षेत्र मैं काम करने की सुविधा नहीं रही होती है, उसमें भी संतोषजनक राशि की पेंशन नहीं होती है। इसलिए आमतौर पर अपने न्यूनतम जरूरतों के खर्च के लिए भी वे अपने परिवार के अन्य सदस्यों पर निर्भर होते हैं। ऐसे मामले लिपे नहीं हैं, जिनमें बीमार होने की स्थिति में किसी बुजुर्ग के साथ उनके परिजन अच्छा व्यवहार नहीं करते या कई बार उन्हें बोझ मानने लगते हैं और उनकी उपेक्षा करते हैं। ऐसे में इस बात की जरूरत शिरत से महसूस की जा रही थी कि देश की बुजुर्ग आबादी की सेहत पर ध्यान देने के लिए सरकार अपनी और से कोई ठोस पहल करें। कुछ समय पहले आए एक अध्ययन में यह तथ्य सामने आया था कि शहरी इलाकों में रहने वाले लगभग पचास फीस बुजुर्ग आर्थिक मुश्किलों और अन्य तरह की चुनौतियों की वजह से जरूरत के वक्त चिकित्सकों के पास नहीं जा पाते हैं। ग्रामीण इलाकों में यह समस्या ज्यादा व्यापक है, जहां बासठ पसंद बुजुगों के सामने आर्थिक और अन्य बाधाएं खड़ी होती हैं जिनकी वजह से उन्हें बीमारी की स्थिति में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। ज्यादातर मामलों में यह एक दुखद सामाजिक हकीकत है कि कई बार पारिवारिक उपेक्षा के शिकार बुजुगों को सरकार की ओर से भी सामाजिक सुरक्षा के रूप में कोई विशेष सुविधा नहीं मिल पाती है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

नई पहल

देश में इलेक्ट्रिक व्हीकल (ईवी) के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार ने बुधवार को दो योजनाओं को मंजूरी दी और इनके लिए 14,000 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया। देश में कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के लिए ईवी को प्रोत्साहन देना जरूरी है। द पीएम इलेक्ट्रिक ड्राइव रिवॉल्यूशन इन इनोवेटिव व्हीकल एनहैंसमेंट (पीएम ई-ड्राइव) योजना के लिए 10,900 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया जो अगले दो वर्षों में फास्टर एडाप्शन ऐंड मैन्युफैक्चरिंग ऑफ (हाइब्रिड एंड) इलेक्ट्रिक व्हीकल्स (फेम) को प्रतिस्थापित करेगी। फेम की शुरूआत 2015 में 900 करोड़ रुपये की आरंभिक पूंजी की मदद से की गई थी। इस योजना का दूसरा संस्करण जो गत वित्त वर्ष समाप्त हुआ उसमें 11,500 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया था। उम्मीद है कि नई योजनाएं देश में ईवी को अपनाए जाने की दिशा में मददगार होंगी और पिछली पहलों की कामयाबी को आगे ले जाएंगी। चूंकि ईवी की आरंभिक लागत पेट्रोल-डीजल इंजनों की तुलना में अधिक होती है इसलिए उसे अपनाने के लिए राजकोषीय समर्थन जरूरी माना जाता है। पीएम ई-ड्राइव योजना की मदद से 24.7 लाख इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों, 3.16 लाख इलेक्ट्रिक तिपहिया वाहनों और 14,028 ई बसों को मदद मिलने की उम्मीद है जिन्हें करीब 3,679 करोड़ रुपये का प्रोत्साहन दिया जाएगा। इस योजना के तहत इलेक्ट्रिक ट्रक और इलेक्ट्रिक एंबुलेंस को बढ़ावा देने के लिए 500 करोड़ रुपये प्रत्येक की राशि आवंटित की गई है जबकि 200 करोड़ रुपये का आवंटन 74,000 सार्वजनिक चार्जिंग स्टेशनों के लिए किया गया है। इसके अलावा पीएम-ईबस सेवा-पेमेंट सिक्युरिटी मैकेनिज्म (पीएसएम) योजना के लिए 3,435.33 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है और यह सार्वजनिक परिवहन प्राधिकरण से ई बसों की खरीद और संचालन पर ध्यान केंद्रित करेगी। योजना के तहत चालू वर्ष से लेकर 2028-29 तक 38,000 इलेक्ट्रिक बसें शुरू की जानी हैं। योजना के तहत शुरूआती दिन से अगले 12 वर्षों तक बसों के परिचालन में भी मदद करेगी। इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की मदद के अलावा इस बार वाणिज्यिक स्तर पर ईवी को अपनाने पर भी जोर है। उदाहरण के लिए इस बार इलेक्ट्रिक कारों के लिए कोई प्रावधान नहीं है। वाणिज्यिक वाहनों पर ध्यान देना समझ में आता है और राजकोषीय समर्थन अधिक मूल्यवान साबित हो सकता है क्योंकि वाणिज्यिक वाहन अधिक प्रदूषण फैलाते हैं। उदाहरण के लिए अगर राजधानी में अधिक इलेक्ट्रिक ट्रक माल लेकर आएंगे तो इससे काफी राहत मिलेगी। इसी प्रकार इलेक्ट्रिक बसें भी देश के कई शहरों के यातायात के कारण होने वाला प्रदूषण कम करेंगी क्योंकि वे डीजल से चलने वाली बसों का स्थान लेंगी। सार्वजनिक परिवहन को बजट समर्थन महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इनमें से अधिकांश घाटे में हैं और इस स्थिति में नहीं हैं कि वे अहम निवेश कर सकें। ऐसे में यह महत्त्वपूर्ण है कि उनका योगदान सीमित रहे। चार्जिंग स्टेशन पर ध्यान देना भी जरूरी है। इसी समाचार पत्र में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार एक ईवी चार्जिंग कंपनी ने भारतीय डाक सेवा के साथ मिलकर हैदराबाद के एक पोस्ट ऑफिस में ईवी चार्जिंग स्टेशन शुरू किया। ऐसे और प्रयासों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। डाक घर प्रायः शहरों में प्रमुख स्थानों पर मौजूद हैं और वहां उपलब्ध जमीन पर ईवी चार्जिंग स्टेशन की स्थापना उपयुक्त हो सकती है। पीएम ई-ड्राइव योजना में एक नई विशेषता होगी खरीदारों के लिए आधार प्रमाणित ई-वाउचर।

जनकपुरी में हुआ सुगन्ध दशमी विधान मंडल पूजन का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। जनकपुरी -ज्योतिनगर जैन मंदिर में गुरुवार को दस लक्षण महापर्व महोत्सव में संयम धर्म की पूजा के बाद दिन में सुगंध दशमी विधान पर भक्ति भाव के साथ पूजन का आयोजन हुआ । प्रातः विधान मण्डल पाण्डुशीला पर शान्तिधारा करने का सोभाग्य चन्द्र प्रभा शाह परिवार को व सतीश सोनिया जैन परिवार को तथा वेदी पर कैलाश बिंदायक्या, महावीर पाटनी व धन कुमार जैन को मिला। प्रबन्ध समिति अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि इधर दिन में सुगंध दशमी के उपवास करने वाली सौभाग्यशाली महिलाओं सोनिया जैन , आरती पाटनी, ज्योति जैन, शिमला कासलीवाल व पिंकी वैद द्वारा व्रत उद्यापन पर विधान मंडल पर साज बाज के साथ पूजन की गई ।विधान प. अजीत शास्त्री द्वारा संपन्न कराया गया। बाद में तत्वार्थ सूत्र की क्लास में छठे अध्याय का अध्ययन किया गया तथा शाम को आरती के बाद सभी द्वारा अष्ट कर्म दहनाय धूपम् निर्वामिति स्वाहा बोलते हुए धूपदानों में धूप खेवन की गई।

हिंदी से शर्म नहीं सम्मान महसूस करें...

14 सितंबर को हर साल हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है, क्यों कि इसी दिन यानी कि 14 सितंबर 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया था। वास्तव में सितंबर का महीना विशेष रूप से हिंदी को समर्पित है और इस महीने में हम सभी हिंदी में अधिकाधिक सरकारी कामकाज करने का संकल्प भी लेते हैं। हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा के दौरान देश के प्रत्येक केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में हिंदी पर अनेक प्रतियोगिताओं, संगोष्ठियों, सेमिनारों का आयोजन किया जाता है और पुरस्कार भी बांटे जाते हैं। हम न केवल सरकारी कामकाज करने में बल्कि अपने दैनिक जीवन में भी हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने का संकल्प लेते हैं ,लेकिन यहां यह विचार करने की आवश्यकता है कि आखिर क्या कारण हैं कि एक हिंदी बाहुल्य वाले देश में हमें हिंदी को आगे बढ़ाने के लिए दिवस मनाना पड़ रहा है और इसके अधिकाधिक प्रचार प्रसार के लिए पुरस्कार तक बांटने पड़ रहे हैं। वास्तव में यदि हमें हिंदी भाषा का विकास करना है तो हमें संविधान की आठवीं अनुसूची में निहित सभी भारतीय भाषाओं को एक साथ लेकर चलना होगा। हिंदी को सभी भारतीय भाषाओं से शब्द अपने में समाहित करने होंगे तभी इसका शब्दकोश और अधिक व्यापक बन सकेगा। विकीपीडिया पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार अनुच्छेद 351 'भारत के संविधान का एक अनुच्छेद है। यह संविधान के भाग 17 में शामिल है और संघ की राजभाषा के विशेष निदेश का वर्णन करता है। यह अनुच्छेद हिंदी भाषा के प्रसार और विकास को सुनिश्चित करता है और साथ ही इस उद्देश्य हेतु संघ या राष्ट्रीय सरकार के कर्तव्यों को भी व्याख्यायित करता है। इस अनुच्छेद में यह कहा गया है कि संघ को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हिंदी भारत के विविध सांस्कृतिक तत्वों के लिए अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। इसमें हिंदी की विशिष्ट विशेषताओं हिंदुस्तानी जैसी अन्य भारतीय भाषाओं और भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में निर्दिष्ट भाषाओं में उपयोग किए जाने वाले रूपों, शैली और अभिव्यक्तियों को बदले बिना आत्मसात करने का निर्देश दिया गया है। इस अनुच्छेद में यह भी वर्णित है कि संघ को संस्कृत पर प्राथमिक ध्यान देने के साथ-साथ जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ अन्य भाषाओं की शब्दावली का उपयोग करके हिंदी को समृद्ध करने का प्रयास करना चाहिए।' दरअसल, आज अंग्रेजी भाषा को ही हम अधिक महत्व दे रहे हैं, क्यों कि एक आम सोच यह विकसित हो चुकी है कि अंग्रेजी के बिना कोई भी काम नहीं चल सकता है, जबकि यह सोच बहुत ही तुच्छ और गलत है। भाषा कोई भी हो,कभी अच्छी व बुरी नहीं होती है। सभी भाषाएं अपने आप में अच्छी हैं और उनका अपना शब्दकोश व व्याकरण है। हिंदी का अपना एक व्यापक शब्दकोश है और एक-एक भाव को व्यक्त करने के लिए सैकड़ों शब्द हैं। हिन्दी लिखने के लिये प्रयुक्त देवनागरी लिपि अत्यन्त वैज्ञानिक है। हिंदी को संस्कृत शब्द संपदा एवं नवीन शब्द-रचना-सामर्थ्य विरासत में मिली है। यह भी एक तथ्य है कि देशी भाषाओं एवं अपनी बोलियों आदि से शब्द लेने में संकोच नहीं करती। अंग्रेजी के मूल शब्द लगभग 10,000 हैं, जबकि हिन्दी के मूल शब्दों की संख्या ढाई लाख से भी अधिक है। एक आंकड़े के अनुसार आज हिन्दी बोलने एवं समझने वाली जनता पचास करोड़ से भी अधिक है। इतना ही नहीं, हिंदी दुनिया की दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है और इसका साहित्य सभी दृष्टियों से समृद्ध है। हिन्दी आम जनता से जुड़ी भाषा है तथा आम जनता हिन्दी से जुड़ी हुई है। हिंदी भारत के स्वतंत्रता-संग्राम की वाहिका और वर्तमान में देशप्रेम का अमूर्त-वाहन है। यह भारत की सम्पर्क भाषा है। हिंदी आज पत्रकारिता, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, इंजीनियरिंग, मेडिकल, साइंस, स्पेस समेत अनेक क्षेत्रों की भाषा है और कोई क्षेत्र ऐसा बचा नहीं है जहां हिंदी का प्रयोग नहीं हो रहा है। यह बहुत ही सरल,सहज व वैज्ञानिक दृष्टिकोण लिए हुए बहुत ही शानदार व सशक्त भाषा है। जानकारी मिलती है कि आज इसमें(हिंदी भाषा में) लगभग 1.5 लाख शब्द हैं और अध्ययन की सभी शाखाओं के तकनीकी शब्दों को मिलाकर लगभग 6.5 लाख शब्द हैं, जो कि काफी अच्छी संख्या है। कहना गलत नहीं होगा कि आज विज्ञान और मानविकी की सभी शाखाओं को सम्मिलित करने पर हिंदी का एक व्यापक शब्द-भंडार बनता है। हम अंग्रेजी सीखें, विश्व की अन्य कोई भी भाषाएं सीखें, पढ़ें, लिखें और बोलें लेकिन अपनी स्वभाषा को कभी भी नहीं छोड़ें, क्यों कि जो बात हम अपनी स्वयं की भाषा में सहजता से किसी दूसरे तक पहुंचा सकते हैं, वह किसी अन्य भाषा में नहीं। हिंदी हमारे देश की संस्कृति, हमारी सभ्यता, हमारी अखंडता, हमारी अनेकता में एकता की अनूठी पहचान है। जानकारी देना चाहूंगा कि भारतवर्ष के संविधान के भाग-5 के अनुच्छेद 120, भाग-6 के अनुच्छेद 210 एवं संविधान के भाग-17 में अनुच्छेद 343 से 351 में राजभाषा हिंदी संबंधी प्रावधान किए गए हैं। इन्हीं प्रावधानों के अनुक्रम में जारी अधिनियमों नियमों आदेशों एवं निर्देशों के अनुपालन में भारत सरकार राजभाषा हिंदी के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिए लगातार प्रयासरत है। भारत के नागरिक होते हुए हम सभी को यह जानकारी होनी चाहिए कि राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा प्रतिवर्ष जारी किए जाने वाले राजभाषा संबंधी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए नीति-निदेशों का सही से अनुपालन एवं विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में कार्य करना संघ सरकार के प्रत्येक कार्यालय का कर्तव्य है। देश के प्रत्येक नागरिक को यह चाहिए कि राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में वे अपनी अग्रणी भूमिका निभायें। यह ठीक है कि आज अंग्रेजी विश्व स्तर की भाषा बनकर उभरी है लेकिन राजभाषा हिंदी के सर्वोच्च शिखर पर कायम रहना वास्तव में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। आज केंद्रीय सरकार के सभी कार्यालयों में प्रयोग की जाने वाली हमारी सरल और सहज राजभाषा हिंदी के विकास और प्रगति के लिए कुछ बिंदुओं पर हमेशा ध्यान देने की जरूरत है जैसे कि क और ख क्षेत्र में स्थित कार्यालयों के साथ राजभाषा हिंदी में किया जा रहा शत प्रतिशत पत्राचार बनाए रखा जाए। साथ ही साथ अंग्रेजी में प्राप्त पत्राचार आदि का जवाब नियम-5 के तहत राजभाषा हिंदी में दिया जाए। केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में कार्यालय टिप्पणी (नोटिंग) में यथासंभव राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग किया जाए। इतना ही नहीं, प्रत्येक डाक को राजभाषा हिंदी में चिह्नित (मार्क) किया जाकर हिंदी को बढ़ावा दिया जा सकता है। कार्यालयों में केवल यूनिकोड फॉट का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए एवं इंस्क्रिप्ट 'की-बोर्ड' का प्रयोग बहुत ही महत्वपूर्ण है। केंद्रीय सरकार के कार्यालयों को यह चाहिए कि पात्र अधिकारियों और कार्मिकों के ए पी ए आर एवं सेवा पुस्तिकाओं में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन संबंधी प्रविष्टियां प्रतिवर्ष सुनिश्चित करें। हम सभी को यह याद रखना चाहिए कि राजभाषा हिंदी में कार्य करना हम सभी का संवैधानिक व नैतिक दायित्व है। हम सभी फाइलों में हिंदी में अधिकाधिक कार्य करें और पंजिकाओं को हिंदी में रख-रखाव करें। हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रचार प्रसार के लिए राजभाषा के नीति निदेशों समीक्षाओं और निरीक्षण रिपोर्टों के अनुसार निर्धारित लक्ष्यों हेतु ठोस उपाय एवं जांच बिंदु सुनिश्चित करें एवं हमेशा हिंदी में मूल रूप से कार्य करें। राजभाषा के प्रयोग, इसके प्रचार एवं प्रसार के लिए राजभाषा प्रतिज्ञा का पालन सुनिश्चित करें।हिंदी बहुत सरल और लचीली भाषा है, जिसे सीखने में किसी विशेष कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। कहना गलत नहीं होगा कि आज संसार की उन्नत भाषाओं में हिंदी सबसे अधिक व्यवस्थित भाषा है। हिंदी एक मात्र ऐसी भाषा है जिसके अधिकतर नियम अपवादविहीन है। जानकारी देना चाहूंगा कि विश्व के 132 देशों में जा बसे भारतीय मूल के लगभग 2 करोड़ लोग हिंदी माध्यम से ही अपना कार्य निष्पादित करते हैं। एशियाई संस्कृति में अपनी विशिष्ट भूमिका के कारण हिंदी एशियाई भाषाओं से अधिक एशिया की प्रतिनिधि भाषा है। हमें यह याद रखना चाहिए कि राष्ट्र शरीर है तो धर्म उसकी आत्मा और भाषा उसकी सांस्कृतिक संवाहक। बिना अपनी मातृभाषा के कोई भी संस्कृति मूक होकर मृतप्राय हो जाती है। कहना गलत नहीं होगा कि आज सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्व को समेट हिंदी अब विश्व में लगातार अपना फैलाव कर रही है। देश-विदेश में इसे जानने-समझने वालों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। जानकारी देना चाहूंगा कि इस समय विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है जो हिंदी के बढ़ते प्रयोग और प्रभाव का संकेतक है। निस्संदेह हिंदी दुनिया की सर्वाधिक तीव्रता से प्रसारित हो रही भाषाओं में से एक है। आंकड़ों की बात करें तो आज विश्व में हिंदी भाषी करीब 70 करोड़ लोग हैं। यह तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। 1.12 अरब बोलने वालों की संख्या के साथ अंग्रेजी पहले स्थान पर है। चीनी भाषा मेंडरिन बोलने वाले करीब 1.10 अरब हैं। 51.29 करोड़ और 42.2 करोड़ के साथ स्पैनिश और अरबी का क्रमशः चौथा और पांचवां स्थान है। तो आइए हम अपनी भाषा को एक प्रकाश पंज के रूप में हमेशा आलोकित करने की दिशा में आगे बढ़ें।

सुनील कुमार महला,
फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।
मोबाइल 9828108858

आर्यिका सुप्रज्ञमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में उत्तम संयम धर्म की हुई पूजा

फागी. शाबाश इंडिया। कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाडा,चोरू,नारेड़ा, मंडावरी मेहंदवास निमेडा,लसाडिया तथा लदाना सहित कस्बे के आदिनाथ मंदिर, पार्श्वनाथ जिनालय, मुनिसुव्रतनाथ भगवान मंदिर, पार्श्वनाथ चैत्यालय एवं चंद्र प्रभु नसियां, एवं चंद्रपुरी मंदिर में आज श्रावकों द्वारा उत्तम संयम धर्म की पूजा अर्चना की गई, कार्यक्रम में अग्रवाल समाज के मंत्री कमलेश चोधरी एवं त्रिलोक पीपलू ने बताया कि चातुर्मास वाचना के दौरान पार्श्वनाथ चैत्यालय में विराजमान सुप्रज्ञमति माताजी स संघ के पावन सानिध्य में सकल दिगम्बर जैन समाज फागी के सहयोग से आज दशलक्षण महापर्व के छठे रोज जिन सहस्त्रनाम विधान की पूजा अर्चना में सुख समृद्धि की कामना करते हुए उत्तम संयम धर्म की पूजा अर्चना की गई कार्यक्रम में इससे पूर्व प्रातः अभिषेक, महाशांति धारा बाद विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किये गये, कार्यक्रम में प्यारचंद्र, त्रिलोक चंद्र, शिखर चंद , मनीष कुमार जैन गोयल परिवार पीपलू वाले फागी ने सौ धर्म इंद्र बनने का सोभाग्य प्राप्त किया तथा श्री जी की महाशांति धारा करने का सोभाग्य भी प्राप्त कर सुख समृद्धि की कामना की इसी कड़ी में जिन सहस्त्रनाम विधान में श्रावक श्राविकाओं द्वारा 101 अर्घ्य अर्पित कर सुख समृद्धि की कामना की गई।

भव्योदय अतिशय क्षेत्र रैवासा के वार्षिक मेले के पोस्टर का हुआ विमोचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री 1008 दिगम्बर जैन भव्योदय अतिशय क्षेत्र, रैवासा के रविवार 22 सितंबर को होने वाले वार्षिक मेले के पोस्टर का विमोचन श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर के प्राचार्य विद्वान पंडित सतीश कुमार शास्त्री द्वारा नेमीसागर कॉलोनी स्थित नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में किया गया। रैवासा क्षेत्र के शिरोमणि संरक्षक एवं कार्यकारिणी सदस्य जयकुमार बड़जात्या (सीकर वाले) ने बताया कि वार्षिक मेले की पत्रिका के विमोचन के अवसर पर श्री नेमीनाथ दिगम्बर जैन समाज समिति के अध्यक्ष जे के जैन-कालाडेरा सहित श्रेष्ठीजन में डी सी जैन, अनिल जैन धुआं वाले, महेंद्र बिलाला, विजय कुमार बड़जात्या, संजय जैन आदि सहित नेमीसागर कॉलोनी के सैंकड़ों श्रावकगण उपस्थित रहे। कार्यकारिणी सदस्य बड़जात्या ने अवगत कराया कि भव्योदय अतिशय क्षेत्र, रैवासा में वार्षिक मेले के अवसर पर पूरे भारतवर्ष के दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी आकर अतिशयकारी सुमतिनाथ भगवान के दर्शन एवं पूजन का लाभ उठाते हैं।

श्रद्धांजलि

14 सितम्बर 2024

धर्मनिष्ठ समाजसेवी श्री रतनलाल जी बिनायक्या

(धोबलाई वाले, डीमापुर निवासी)

श्रद्धावनत

स्व. श्री रतनलाल जी बिनायक्या

जन्मतिथि : 09 जनवरी 1929
स्वर्गवास : 14 सितम्बर 2008

स्व. सोहनी देवी बिनायक्या (धर्मपत्नी)

पुत्र – पुत्रवध
नरेन्द्र कुमार - सुशीला देवी बिनायक्या
विजय कुमार - नीलम देवी बिनायक्या

पौत्री – दामाद
अंकिता - अनुभव जैन
चीनी जैन - अपूर्व जैन

पौत्र –
निखिल बिनायक्या (राजा)

बेटी – दामाद –
श्रीमती राजू देवी - महेन्द्र जी सेठी
श्रीमती संतोष देवी - ओमप्रकाश जी सेठी
श्रीमती सरोज देवी- श्रीपाल जी पहाड़िया
श्रीमती रेखा देवी - राजकुमार जी छाबड़ा

पौत्र – पौत्रवधु
सुकेश कुमार - रितु देवी
राहुल जैन - प्रियंका जैन

भाई
दुलीचन्द जी बिनायक्या
संजय कुमार - ममता देवी बिनायक्या
सुनील कुमार - नीलम देवी बिनायक्या
अनील कुमार - लाड देवी बिनायक्या

विजय कुमार जैन जैम्स डाईमण्ड एण्ड ज्वेलर्स 120 जौहरी बाजार, जयपुर मो. 9436004242 मो. 9799440777	कालकुट इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रा. लि. वेयर हाउसेज फाईनेंस एण्ड शेयर इनवेस्टमेंट जी-122 उदय पथ, श्याम नगर, जयपुर मो. 9436004242	एम/एस चीनी कुर्तीज वुमेन्स गारमेन्ट्स डी-131, जनपथ श्याम नगर, जयपुर मो. 9008542435	एम/एस वी एन सी एन कन्सलटेन्सी एण्ड ईनवेस्टमेंट 120 जौहरी बाजार, जयपुर मो. 9436004242

फाल्गुन पारीक,सुहेल मुंशी का राज्यस्तरीय फुटबाल टीम के लिए चयन

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिनांक 12.9.24 को सैंट जेवियर्स स्कूल के फाल्गुन पारीक क्लास 11th व सुहेल मुंशी क्लास 10th के दोनो छात्रो का आज राज्य स्तरीय होने वाली प्रतियोगिता में फुटबॉल के खेल में चयन हुआ है। सैंट जेवियर्स स्कूल में फुटबॉल टीम के मोहित राजोरिया कप्तान है दोनों छात्र ही अंडर 17½ में है। फाल्गुन पारीक भाजपा के आलोक पारीक के पुत्र है जो सैंट जेवियर्स स्कूल की सी-स्कीम शाखा में अभी 11वी कक्षा में अध्ययन कर रहा है।

चौमूं दिगंबर जैन मंदिर में दसलक्षण पर्व पर हुई उत्तम संयम धर्म की पूजा

चौमूं. शाबाश इंडिया

शहर में चंद्रप्रभु शांतिनाथ पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर जी में जैन समाज द्वारा 10 लक्षण महापर्व के छठे दिवस पर प्रातः कालीन अभिषेक शांति धारा एवं संयम धर्म की पूजन की गई। जैन समाज प्रवक्ता पंकज बडजात्या ने बताया कि आज के अभिषेक शांति धारा का सौभाग्य धन कुमार अनिल कुमार मनोज कुमार संतोष कुमार जैन इटावा वालों को प्राप्त हुआ। जैन समाज प्रवक्ता पंकज बडजात्या ने बताया कि संयम धर्म यह बताता है कि मनुष्य पांचो इंद्रिय को बस में रखे एवं जीवन में यह नियम धारण कर ले किसी भी चीज का लोभ ना करें तो जीवन सफल हो जाता है क्योंकि जब तक मनुष्य अपने मन को बस में नहीं कर सके तब तक संयम रखना कठिन है मन को बस में रखना ही संयम धर्म है। सुनील जैन बताया कि आज जैन समाज के लोगों ने सुगंध दशमी का त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सुगंध दशमी व्रत की कथा वाचन हुआ एवं सायकाल जिनालियो में जैन समाज के सभी बच्चे बड़े बुजुर्ग महिला पुरुष ने धुप खेई जिससे जिनालय एवं आसपास का वातावरण महक उठे। संयोजक नितेश पहाड़िया के सानिध्य में आयोजकों द्वारा महा आरती णमोकार भजन भक्तामर पाठ नृत्य प्रतियोगिता इत्यादि कार्यक्रम संपन्न हुए। हीरालाल जैन ने बताया इन सभी कार्यक्रम के दौरान गुन माला देवी सरोज देवी प्रियंका जैन एकता जैन विनीता पहाड़िया सुनीता जैन मीना देवी चंदा देवी जैन समाज उपाध्यक्ष प्रमोद जैन जयकुमार जैन जैन समाज अध्यक्ष राजेंद्र जैन मंत्री राजेंद पाटनी नेमीचंद जैन अजय जैन पदमचंद जैन अनिल जैन सुरेश छाबड़ा विनोद कासलीवाल अनिल पहाड़िया इत्यादि श्रावक मौजूद थे।

योगाचार्य इंजीनियर मनीष जैन ने किया कोटा जिले का नाम रोशन

आयुष मंत्रालय द्वारा मिला योग मास्टर सर्टिफिकेशन

कोटा। नगर के सेक्टर 4 तलवंडी में निवास करने वाले इंजीनियर मनीष जैन ने आयुष मंत्रालय,भारत सरकार द्वारा आयोजित योग सर्टिफिकेशन बोर्ड के ''योग मास्टर'' परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए परीक्षा में सफल हुए। यह परीक्षा सेंट्रल गवर्नमेंट आयोजित करती है जिसमें देश-विदेश से परीक्षार्थी हिस्सा लेते हैं। इससे पहले मनीष जैन ने योग शिक्षक एवम मूल्यांकन कर्ता की परीक्षा में सफलता हासिल कर योग के क्षेत्र में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। **योग मास्टर की संक्षिप्त भूमिका विवरण:** प्रमाणित योग पेशेवर ''योग मास्टर'' योग शैक्षिक कार्यक्रमों में मास्टर शिक्षक/प्रशिक्षक के रूप में कार्य करेंगे और कुशल पेशेवर सभी स्तरों के लिए योग सिखा सकते हैं, कुशल पेशेवर योग प्रशिक्षण और शिक्षा के तहत प्रमाणन की सभी श्रेणियों के लिए पढ़ा सकते हैं, मूल्यांकन कर सकते हैं और योग के प्रति एक मार्गदर्शक शक्ति होंगे। साथ ही उनके द्वारा यह कहा गया कि वर्तमान जीवन शैली में योग का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि जहां पहले विभिन्न प्रकार के योग मनुष्य द्वारा अपने नियम कार्यों के निष्पादन के दौरान हो जाता था। वही आज मनुष्य के पास शारीरिक कार्यों की तुलना में मानसिक कार्य अधिक हो गए हैं और पहले कि तुलना में मनुष्य के जीवन बेहद आसान भी हो गया है। यही कारण है की वर्तमान में शारीरिक कार्यों की कमी एवं मानसिक तनाव अधिक होने के कारण मानव शरीर अनेकों रोगों का घर बनता जा रहा है। इसलिए मनुष्य शरीर रोगमुक्त एवं स्वास्थ रखने के लिए व्यायाम की आवश्यकता होती है योग की यदि हम बात करें तो यह केवल एक व्यायाम नहीं है बल्कि व्यायाम के साथ-साथ यह एक अनुशासित विज्ञान है जो मनुष्य के मन, शरीर एवं आत्मा के बीच तालमेल बिठाने में मदद करता है और इसी तालमेल के कारण मनुष्य को उत्तम स्वास्थ्य एवं शाश्वत आनंद प्राप्त करने में मदद मिलती है।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

''हिन्दी दिवस 14 सितंबर पर विशेष''

हिन्दी की राष्ट्रव्यापी स्वीकार्यता चाहिये

विजय कुमार जैन राघौगढ़ म.प्र.

सर्वविदित है 14 सितंबर 1949 को हिन्दी भारत की राजभाषा घोषित की गई थी। और राजकाज के लिये पन्द्रह वर्ष तक अंग्रेजी को संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग करने की स्वीकृति दी गई थी, लेकिन तब से आज तक सात दशकों से अधिक वर्षों में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का सम्मान नहीं मिला। संतोष का विषय है कि आधुनिक संचार क्रांति के नये युग में मीडिया, फिल्म जगत और उद्योग सभी क्षेत्रों में हमारी प्यारी भाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को अपेक्षाकृत बल मिला है। दक्षिण भारतीय भी हिन्दी के प्रति अब ज्यादा दुराग्रह नहीं रखते, मगर खेद का विषय है कि आज तक किसी शासनकाल में हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने सक्रिय प्रयास नहीं हुए, हिन्दी दिवस के आयोजन मात्र औपचारिकता बन गये है। 14 सितंबर 1949 को भारत के संविधान में हिन्दी को भारतीय गणराज्य की राष्ट्र भाषा बनाने का निर्णय लिया गया और उसी दिन की स्मृति में संपूर्ण भारत में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। महाकवि मैथिली शरण गुप्त ने लिखा है ₹भगवान भारत वर्ष में गूंजे हमारी भारतीह ।भारती से महा कवि का आशय राष्ट्र भाषा हिन्दी से है। विश्व के 180 देशों में हिन्दी बोलने और समझने बाले नहीं है। पिछले 49 वर्षों के दौरान ग्यारह विश्व हिन्दी सम्मेलन विश्व के अनेक नगरों में आयोजित किये गये। हिन्दी लेखकों एवं कोटि के विद्वानों के आपसी सामन्जस्य से सौहार्द का वातावरण निर्मित हुआ है। विदेशों में हिन्दी का प्रचार प्रसार धीरे धीरे गति पकड़ रहा है ।मॉरीशस,फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गुयाना, नीदरलैंड, दक्षिण अफ्रीका, नार्वे, वियतनाम, जापान, अमेरिका, जोहान्सबर्ग आदि देशों में ऐसी अनेक संस्थायें है जो हिन्दी साहित्यकारों की जयंती मनाते है। राम चरित मानस और गीता का पाठ करबाते है। होली और दीवाली के अवसर पर मिलन समारोह और कवि सम्मेलन आयोजित करते है। मगर दुख का विषय है कि हम विदेशों में हिन्दी की इस हलचल को देख कर खुश तो हो लेते है किन्तु इस बात पर ध्यान नहीं देते कि, 10 से 14 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित पाँच दिवसीय प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मती इंदिरा गाँधी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में का जो संकल्प लिया था, वह अभी तक अधर में ही क्यों लटका हुआ है। चेकोस्लोवाकिया के विद्वान प्रो. ओदोलेन स्मेकल ने नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में कहा था देश की आत्मा को समझने के लिये उसकी भाषा को समझना चाहिए। मुझे जान पड़ता है कि भारत की आत्मा को समझने के लिये संस्कृत निष्ठ हिन्दी को जानना आवश्यक है, क्योंकि वह अपने मूल रूप में संस्कृत शब्दों को आत्मसात करने के फलस्वरूप समृद्धतम वर्तमान भारत की राष्ट्र भाषा है। भारत के संविधान के भाग 17 अध्याय 1 में भारत की राजभाषा का उल्लेख है। संविधान में संकल्प 343 में स्पष्ट उल्लेख है कि भारत की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। भारतीय संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिये अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा। संविधान निमार्ताओं ने बड़ी चालाकी से राजभाषा हिन्दी के साथ पन्द्रह वर्ष तक एक प्रावधान भी रखा था। हिन्दी राजभाषा के रूप में संवैधानिक रूप से तो प्रतिष्ठित हो गई पर हिन्दी को नौकरशाहों ने समय से ही अपनी भाषा और संस्कृति को भारत में स्थापित करने का कार्य प्रारंभ कर दिया था। अंग्रेजों ने अपना शासन उज्जवल करने सबसे पहले अंग्रेजी को शासन और प्रशासन की भाषा बनायी। भारत में आजादी के पहले और बाद भी प्रशासकों ने अंग्रेजी को ही अपनी कार्य भाषा बनाया और हिन्दी की उपेक्षा कर उसके लिये मुश्किलें पैदा की हैं। आचार्य विनोबा भावे ने कहा है हिन्दी रूपी सूरज की रोशनी के बिना सबेरे की कल्पना व्यर्थ है। मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मै नहीं सह सकता। निश्चित ही यह गर्व का विषय है कि भारत के दक्षिण प्रदेशों तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, केरल आदि में हिन्दी के व्यापक प्रचार प्रसार में साधु सन्तों, फकीरों तथा उत्तर भारत से आये मारबाड़ी, गुजराती और मुसलमान व्यापारियों ने सराहनीय हिन्दी सेवा की है। गुजरात में जन्मे महात्मा गाँधी और स्वामी दयानंद सरस्वती के साथ साथ कवि दयाराम का योगदान हमेशा याद रहेगा। बंगाल के कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, बंकिम चन्द्र चटर्जी और शरतचंद्र का हिन्दी के लिये योगदान महत्वपूर्ण रहा है। भाषा और संस्कृति एक दूसरे को प्रभावित करती हैं। किसी भी देश का समाज जब किसी विदेशी भाषा की संस्कृति पर आशक्त होता है तो उसके आदर्श और नैतिक मूल्य बदल जाते है। अपनी भाषा की आत्मीयता, गहन अनुभूतियाँ और मानवीय संबंधों का आलोक किसी भी विदेशी भाषा से प्राप्त नहीं हो सकता। हमें विदेशी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने का विरोधी नहीं होना चाहिये, किन्तु हमे किसी भी स्थिति में विदेशी भाषा की संस्कृति से प्रभावित नहीं होना चाहिये। राष्ट्रीय चेतना के यशस्वी कवि माखनलाल चतुर्वेदी के अनुसार ''हिन्दी हमारे देश की भाषा की प्रभावशाली विरासत है।'' महात्मा गाँधी के अनुसार हिन्दी ही देश को एक सूत्र में बाँध सकती है। पूर्व प्रधानमंत्री श्री मती इंदिरा गाँधी ने कहा है हिन्दी विश्व की महान भाषाओं में से एक है। वह करोड़ों लोगों की मातृभाषा है और करोड़ों लोग ऐसे है जो दूसरी भाषा के रूप में बोलते हैं। सुप्रसिद्ध दिगम्बर जैन संत आचार्य विद्या सागर जी हिन्दी को बढ़ावा देने राष्ट्र व्यापी अभियान रखकर जनजागृति ले रहे है। उन्होंने नारा दिया है इंडिया नहीं भारत बोलो। आचार्य विद्या सागर जी की प्रेरणा से बालिका आवासीय विद्यालय

जबलपुर, रामटेक,डोंगरगढ़, इंदौर में संचालित हैं,इसी प्रकार क्रांतिकारी जैन मुनि सुधासागर जी की प्रेरणा से श्रमण संस्कृति संस्थान द्वारा सांगानेर-जयपुर एवं खनियांधाना म.प्र. में बालक आवासीय विद्यालय संचालित हैं इनमें हिन्दी माध्यम से पढ़ाई होती है। हिंदी की वर्तमान दशा को देखते हुए समाज को एक दिशा प्रदान करना आवश्यक है। हमे हिन्दी के संदर्भ में अपने घर से शुरूआत करना होगा। बच्चों को समझा कर मम्मी-डैडी, अंकल-आंटी कजिन शब्दों का प्रयोग बंद करना होगा। सामाजिक स्तर पर भी हिन्दी में परिवर्तन आवश्यक है। मोबाइल अथवा टेलीफोन पर हेलो शब्द का प्रयोग होता है, जबकि प्रारंभ होना चाहिए कहिये अथवा मैं बोल रहा हूँ आप कौन? अथवा नमस्कार से प्रारंभ होना चाहिये। दुकानों, शिक्षण संस्थाओं, शासकीय कार्यालयों ने नाम पट हिन्दी में होना चाहिये। जलपान के समय टी के स्थान पर चाय, कोक के स्थान पर शरबत या शिकंजी कहना चाहिये। ब्रेक फास्ट के स्थान पर अल्पाहार, लंच एवं डिनर को मध्यान्ह भोजन, रात्री भोजन कहना चाहिये। शुभ विवाह के निमंत्रण पत्र पूर्णतः हिन्दी में छपबाने होंगे। कितनी हास्यास्पद बात है हम भगवान गणेश का चित्र लगाते है मंगल श्लोक हिन्दी में लिखते है, किन्तु शेष कार्यक्रम पति-पत्नी के नाम आदि अंग्रेजी में होते है। केवल अंग्रेजी पुत्रों की मानसिकता बदलनी है। इसके के लिये हमे पहल करनी होगी। हमे किसी से भी अंग्रेजी में पत्राचार अथवा वार्तालाप नही करनी चाहिये। हम सुधर जायेंगे तो अन्य लोग हमारा अनुशरण करने लगेंगे। हमे समझना पड़ेगा कि हिन्दी का अपमान देश का अपमान, देशवासियों का अपमान, भारत माता का अपमान है। उस दिन हिन्दी को लाने के लिये किसी क्रांति की आवश्यकता पड़ती है तो वह भी जनता ही करेगी। जब हम अंग्रेजी समझने से इंकार कर देंगे, जब हम अंग्रेजी पत्रों का उत्तर हिन्दी में देना प्रारंभ कर देंगे तो सामने बाला स्वयं ही हिन्दी अपनाने विवश हो जायेगा। **प्रेषकः-विजय कुमार जैन**

देवीपुरा जैन मंदिर में पुण्यार्जक परिवार के साथ धर्मावलंबी

सुगंध दशमी पर धूप की सुगंध से महक उठे जिनालय

दीवान जी की नसियां में सुगंध दशमी का आयोजन

दशलक्षण पर्व के छठे दिन उत्तम संयम धर्म की पूजा

सीकर. शाबाश इंडिया

पर्वराज दसलक्षण महापर्व के अति पावन अवसर पर जैन धर्मावलंबियों द्वारा छठे दिन उत्तम संयम धर्म के रूप में मनाया गया। समाज के विवेक पाटोदी ने बताया कि इसी दिन भाद्रपद शुक्ल दशमी तिथि पर दिगंबर जैन धर्मावलंबियों द्वारा सुगंध दशमी (धूप दशमी) का पर्व मनाते हैं। इस दिन सभी जैन जिनालयों में वेदी में विराजित 24 तीर्थंकरों के सम्मुख , शास्त्रों व जिनवाणी के सम्मुख धूप अग्नि पर धूप खेवन की जाती है , जो कि जैन धर्म में बहुत महत्व रखता है। इस दिन धूप खेवन यानि जिनेंद्र प्रभु के समक्ष धूप अर्पित करके यह पर्व मनाया जाता है। शहर के बावड़ी गेट स्थित बड़ा जैन मंदिर में धूप दशमी पर विशेष धार्मिक आयोजन संपन्न हुए । दीवान जी की नसियां मंदिर जी में भोपाल से पधारी ब्रह्मचारिणी सविता दीदी व ज्योति दीदी के सानिध्य में उत्तम संयम धर्म की व धूप दशमी की पूजा संपन्न हुई। ब्रह्मचारिणी ज्योति दीदी ने बताया कि मन और इन्द्रियो को नियंत्रित करना, विषयों के प्रति आशक्ति को हटाना ही संयम है, जीवन मे सफलता प्राप्त करने के लिए संयम बहुत आवश्यक है शहर के देवीपुरा जैन मंदिर कमेटी के मंत्री पंकज दुधवा व सदस्य नरेश कालिका ने बताया कि उत्तम संयम धर्म के अवसर पर मंदिर में समस्त मांगलिक क्रियाएं करने का सौभाग्य केशरीमल पदमचंद अरुण कुमार पिराका परिवार को प्राप्त हुआ। नया मंदिर जी से पंडित जयंत शास्त्री ने बताया कि सम्यक प्रकार से नियंत्रण करना संयम है। संयम जब आत्मा के आश्रय से होने वाले सम्यग्दर्शन के साथ होता है, तब ह्यउत्तम संयम धर्मह्ल नाम पाता है। साथ ही पंचेन्द्रिय तथा मन के विषयों में आसक्ति को घटाना तथा इसके कारण पंचेन्द्रिय जीवों की रक्षा होना, वह व्यवहार से संयम कहलाता है।

यही बात पंडित द्यानतराय जी श्री दसलक्षण पूजन में कहा हैं:

काय-छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री-मन वश करो।
संयम-रतन संभाल, विषय-चोर बहु फिरत हैं।

सुगंध दशमी के विशेष अवसर पर शहर के बावड़ी गेट स्थित बड़ा जैन मंदिर, बजाज रोड़ स्थित नया मंदिर , जाट बाजार स्थित दीवान जी की नसियां मंदिर सहित समस्त 11 मंदिरों में प्रातः काल से सांयकाल जैन श्रद्धालुओं की भीड़ रहती हैं।

तेजा दशमी मेला पर बिजलबा गांव में 54 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ

पहली बार रक्तदान शिविर लगने पर गांव वालों में छाई खुशी की लहर

बूंदी. शाबाश इंडिया

रक्तदान महादान को सबसे बड़ा दान मानते हुये सीताराम मीणा व रामलक्ष्मण मीणा नर्सिंग ऑफिसर (सांवलपुरा) की पहल पर बीजलबा ग्राम वासियों के सहयोग से तेजा दशमी के मेले के अवसर पर 13 सितंबर 2024 को पहली बार रक्तदान शिविर आयोजित किया गया जिसमें बहुत से लोगों ने पहली बार रक्तदान किया और रक्तदान शिविर में 54 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। रक्तदान शिविर में पति पत्नी सीताराम मीणा व अनिता मीणा ने एक साथ रक्तदान किया और महिलाओं और नवयुवको ने पहली बार बढ़ चढ़कर भाग लिया।

ग्रामवासियों का रहा सहयोग: इस अवसर पर बड़े बुजुर्गों व गांव वासियों ने तेजाजी महाराज की पूजा अर्चना की और रक्तदान शिविर की शुरूआत करके रक्तवीरों को मोटिवेट कर रक्तदान करवाया। और रेगुलर रक्तदान करने की अपील की ताकि ब्लड बैंक में हो रही ब्लड की कमी को पूरा किया जा सके इससे इमरजेंसी मरीज जैसे एक्सीडेंट मरिज, थैलेसीमिया मरीज,डायलिसिस मरीज,डिलीवरी आदि इमरजेंसी के समय पर मरीज को रक्त मिल सके।

रक्तदान करने में इन्होंने लिया भाग: सीताराम मीणा,अनिता मीणा,रानी बाई मीणा, मनीषा मीणा,बन्टी मीणा ,बुद्धि प्रकाश, राधेश्याम, सुगन चंद मीणा, रमेश चंद मीणा, राजेश मीणा, धनराज, प्रधान मीणा, बाबूलाल मीणा, अभिषेक, मनीष मीणा, धीरज मीणा, कन्हैयालाल अध्यापक, धर्मराज मीणा, रामसहाय मीणा,धनराज प्रतिहार,कोमल नागर, आत्माराम, रघुवीर मीणा, मनराज मीणा, आशाराम मीणा, परसराम मीणा, रामकेश मीणा, राजेश मीणा, अनिल धाकड़, शंकर धाकड़, रामदयाल मीणा, धर्मेश मीणा, मनराज मीणा, राजेश योगी, बलराम गुर्जर,आशाराम मीणा, भारत राज मीणा,बिन्टू मीणा, आकाश मीणा, बनवारी गुर्जर, गीताराम गुर्जर,गल्लू गुर्जर, कन्हैयालाल मीणा, रमेश मीणा, सद्दाम हुसैन, जगदीश मीणा, लोकेश कुमार मीणा, विजय कुमार मीणा,नरेश मीणा, रामराज जाट, उम्मेद धाकड़, बलराम नागर, दिनेश नागर, शानू शर्मा ने किया रक्तदान।

इन्होंने किया रक्तवीरों का धन्यवाद: रक्तदान शिविर समाप्ति पर कैंप ऑर्गेनाइजर सीताराम मीणा व रामलक्ष्मण मीणा नर्सिंग ऑफिसर ने सभी रक्तवीरो को धन्यवाद देते हुए बताया कि प्रत्येक नौजवान को एक वर्ष में तीन से चार बार रक्तदान करना चाहिए जिससे स्वयं की जिंदगी के साथ-साथ दूसरे की जिंदगी को भी बचाने का मौका मिलता है।

दशलक्षण महापर्व में पंचमेरु जी का हुआ सामूहिक कलशाभिषेक

निवाई में उत्तम संयम धर्म की संगीतमय पूजा आराधना

निवाई. शाबाश इंडिया

दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर में जैन मुनि अनुसरण सागर महाराज के सानिध्य में पंचमेरु जी के सामूहिक कलशाभिषेक का आयोजन किया गया जिसमें श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। जैन समाज के प्रवक्ता विमल जौंला एवं सुनील भाणजा ने बताया कि बड़ा जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व के तहत निवाई के सम्राट भगवान पार्श्वनाथ जी का सामूहिक कलशाभिषेक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें भगवान पार्श्वनाथ जी कि माला पहनने का सौभाग्य ज्ञानचंद विमल कुमार अशोक कुमार रमेश कुमार जैन भाणजा को मिला। कार्यक्रम में दशलक्षण महापर्व के चलते सुगंध दशमी पर्व की महाआरती करने का सौभाग्य नेमीचंद संजय कुमार अंकित जैन सिरस परिवार को भगवान की आरती करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। चातुर्मास कमेटी अध्यक्ष सुनील भाणजा एवं मीडिया प्रभारी विमल जौंला एवं हितेश छाबड़ा ने बताया कि शुक्रवार को मुनि अनुसरण सागर महाराज के सानिध्य में श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर सहित शहर के सभी जिनालयों में दशलक्षण महापर्व पर उत्तम संयम धर्म की विशेष पूजा अर्चना की गई। शुक्रवार को सोधर्म इन्द्र दिनेश कुमार सुरेंद्र कुमार जैन माधोराजपुरा ने मुख्य मण्डल में श्री फल अर्ध्य समर्पित किए। मुनि श्री के सानिध्य में देव शास्त्र और गुरु सोलह कारण भावना पारसनाथ पूजा शांतिनाथ पूजा सरस्वती पूजा निर्वाण क्षेत्र की पूजा अर्चना की गई। कार्यक्रम के बीच गायक विमल जौंला ने भजनों की प्रस्तुतियां दी जिसमे महेन्द्र चंवरिया पदम सेदरिया गिर्राज रामनगर राकेश पहाड़ी हितेश छाबड़ा प्रदीप माधोराजपुरा शशी सोगानी पिंकी जैन शकुंतला छाबड़ा संजय सोगानी

जितेश गिन्दोडी सुशील नीरा जैन विष्णु बोहरा ने भक्ति नृत्य किया। चातुर्मास कमेटी के प्रचार-प्रसार संयोजक विमल जौंला ने बताया कि जैन धर्मावलंबियों का दशलक्षण महापर्व चल रहा है जिसमें 8 सितंबर से 17 सितंबर तक दशलक्षण महापर्व की आराधना की जाएगी। इसी प्रकार जैन नसिंया मंदिर में आर्यिका विशेष मति माताजी के सानिध्य में आयोजित दस दिवसीय दशलक्षण धर्म मण्डल विधान का आयोजन किया गया जिसमें श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव से दशलक्षण धर्म की पूजा अर्चना की। विधान कार्यक्रम में जैन समाज के मंत्री महावीर प्रसाद पराणा दिलीप बगड़ी धनराज चंवरिया राधेश्याम मित्तल शंभु कठमाणा पारसमल चेनपुरा एडवोकेट रामफूल जैन गिर्राज चंवरिया मीनाक्षी बगड़ी मेनादेवी पराणा सहित कई लोग मौजूद थे।

दसलक्षण महापर्व के पावन अवसर पर विशाल भजन संध्या का आयोजन

एक शाम श्री 1008 आदिनाथ भगवान

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

अजमेर। श्री दिगंबर जैन बीस पंथी नागौरी आमनाय पंचायत छोटा धड़ा की नसिया जी जहा अतिशयकारी एवम चतुर्थकालीन 1008 श्री आदिनाथ भगवान का दरबार है में सोमवार,दिनांक 16 सितंबर 2024 को सांयकाल आरती के पश्चात श्री दिगंबर जैन संगीत मंडल अजमेर के तत्वावधान में एक विशाल भजन संध्या का आयोजन किया गया है जिसमे जैन भजन सम्राट प्रोफेसर सुशील पाटनी 'शील',संजय पहाड़िया, सुभाष पाटनी,विमल गंगवाल,अंकित पाटनी, सुशील दोषी,लोकेश ढीलवारी,नरेश गंगवाल,निर्मल गंगवाल विरेंद्र जैन,धनकुमार लुहाड़िया,श्रेयांस पाटनी आदि की टीम द्वारा भजनों की प्रस्तुति दी जाएगी। कार्यक्रम आयोजक एवम पुण्यार्जक परिवार के अतुल पाटनी एवम मधु पाटनी ने बताया कि पर्युषण पर्व के पावन अवसर पर विगत द्वादश वर्षो से श्रीजी के सम्मुख एवम भक्तिगान से भरपूर भजनों का कार्यक्रम किया जा रहा है जिसमे बाबा के भक्त भाव विभोर होकर भक्ति नृत्य करते है श्रेष्ठ भक्ति करने वाले व्यक्तियों को पाटनी परिवार द्वारा सम्मानित करते हुए पुरस्कृत किया जाता है। इस कार्यक्रम में श्री छोटा धड़ा पंचायत के पदाधिकारी एवम सदस्यगण,श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला एवम युवा महिला संभाग अजमेर की सदस्याए,श्री दिगंबर जैन महासमिति अजमेर सदस्यगण श्री मुनि संघ सेवा समिति के सदस्यगण सहित सम्पूर्ण जैन समाज के धर्मावलंबी भाग लेंगे।

आपकी सेहत के साथ खिलवाड़ तो नहीं कर रही ये सप्लीमेंट दवाइयां

अधिकतर लोगों की लाइफस्टाइल इन दिनों काफी भागदौड़ भरी हो गई है और लोग अपनी सेहत के लिए वक्त नहीं निकाल पाते हैं. इसकी वजह से उनके शरीर में विटामिन और मिनरल्स की कमी होने लगती है ' इस परेशानी से निजात दिलाने के लिए कई बार डॉक्टर विटामिन और मिनरल्स के सप्लीमेंट्स खाने की सलाह देते हैं. हालांकि कई बार लोग गलत तरीके से इस सप्लीमेंट्स खाते हैं, जिसकी वजह से उन्हें फायदा नहीं मिलता है. एक्सपर्ट्स की मानें तो कुछ सप्लीमेंट्स को एक साथ नही लेना चाहिए, वरना शरीर को फायदा नहीं मिल पाएगा. नई दिल्ली के सर गंगाराम हॉस्पिटल के प्रिवेंटिव हेल्थ एंड वेलनेस डिपार्टमेंट की डायरेक्टर डॉ. सोनिया रावत ने बताया कि कई सप्लीमेंट्स ऐसे होते हैं, जिन्हें एक साथ नहीं लेना चाहिए. इन दोनों सप्लीमेंट्स में कुछ घंटों का गैप जरूर होना चाहिए. कुछ विटामिन और मिनरल्स को एक साथ लेने पर वे एक-दूसरे के अब्जॉर्प्शन में परेशानी पैदा कर सकते हैं. इससे शरीर को इन चीजों की सही मात्रा नहीं मिल पाएगी. लोगों को डॉक्टर से सप्लीमेंट्स लेने का सही वक्त और सही तरीका जान लेना चाहिए, ताकि किसी भी तरह का नुकसान न झेलना पड़े.

इन 5 सप्लीमेंट्स को एक साथ लेने से बचें

कैल्शियम और आयरन- कैल्शियम और आयरन सप्लीमेंट्स को एक साथ नहीं लेना चाहिए. इससे कैल्शियम आयरन के अब्जॉर्प्शन को कम कर सकता है. अगर आपको दोनों की जरूरत है, तो इन्हें अलग-अलग समय पर लें. कैल्शियम और आयरन में करीब एक घंटे का गैप रखें.

मैग्नीशियम और आयरन- मसल्स और नर्वस सिस्टम के लिए मैग्नीशियम जरूरी मिनरल है. जबकि आयरन हीमोग्लोबिन के लिए जरूरी है. मैग्नीशियम और आयरन का भी एक-दूसरे के अब्जॉर्प्शन पर प्रभाव पड़ता है. मैग्नीशियम आयरन के अवशोषण को कम कर सकता है. ऐसे में ये चीजें एक साथ न लें.

विटामिन सी और विटामिन इ12 - इम्यून सिस्टम को मजबूत करने के लिए विटामिन उ जरूरी है, तो नर्वस सिस्टम के लिए विटामिन इ12 महत्वपूर्ण है. ये दोनों सप्लीमेंट्स साथ लेने से बचना चाहिए, क्योंकि विटामिन सी की ज्यादा मात्रा विटामिन इ12 के अब्जॉर्प्शन को कम कर सकती है.

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान विधानसभा,जयपुर।

विटामिन सी और मैग्नीशियमः हड्डियों और कैल्शियम को अब्जॉर्ब करने के लिए विटामिन ऊजरूरी है. दूसरी तरफ मैग्नीशियम भी हड्डियों को हेल्दी रखने में मदद करता है. हालांकि विटामिन ऊ और मैग्नीशियम को एक साथ लेने से बचना चाहिए. ये चीजें भी एक दूसरे को प्रभावित कर सकती हैं.

विटामिन के और विटामिन ए - खून जमने के लिए विटामिन ड जरूरी है, जबकि विटामिन ए एक एंटीऑक्सीडेंट है. विटामिन ए का अत्यधिक सेवन विटामिन ड के काम को डिस्टर्ब कर सकता है. इसलिए दोनों विटामिन्स की उच्च मात्रा का सेवन एक साथ करने से बचना चाहिए।

केन्द्रीय विद्यालय नसीराबाद का जयपुर संभाग के उपायुक्त यादव ने किया औचक निरीक्षण

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

नसीराबाद। केंद्रीय विद्यालय जयपुर संभाग के उपायुक्त डॉ. अनुराग यादव ने पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नसीराबाद का औचक निरिक्षण किया। उपायुक्त का प्रातः स्काउट गाइड के विद्यार्थियों द्वारा स्वागत किया गया एवं विद्यालय की स्कूल कैप्टन निहारिका अग्रवाल ने उपायुक्त का तिलक लगाकर स्वागत किया। उपायुक्त ने विद्यालय परिसर में पीएम श्री योजना के तहत हो रहे विकास कार्यों का अवलोकन किया एवं अपने अमूल्य सुझाव दिए। उपायुक्त यादव ने स्काउट गाइड गतिविधियां, खेल का मैदान, कक्षाकक्ष, कार्यालय ,विद्यालय के विभिन्न विभागों एवं प्रयोगशालाओं का भी निरीक्षण किया और अपने अमूल्य सुझाव दिए । उपायुक्त ने कक्षा 12 के विद्यार्थियों के साथ संवाद करते हुए छात्रों को शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक कार्यक्रम एवं गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उपायुक्त ने विद्यार्थियों से संवाद के दौरान कहा कि अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए योजना बनाकर तैयारी करें एवं अच्छे अंक प्राप्त करें। उपायुक्त ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हुए नए और व्यापक बदलाव को लेकर प्राचार्य, उपप्राचार्य एवं शिक्षकों से विस्तार पूर्वक चर्चा की और कहा की शिक्षक नई शिक्षा नीति का बेहतर तरीके से अध्ययन कर शिक्षा को क्रियाकलाप आधारित एवं अंतर विषय अप्रोच के साथ बच्चों को ज्ञान दें। प्राथमिक शिक्षकों के साथ संवाद के दौरान FLN के तहत विद्यार्थियों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए चर्चा की। विद्यालय के प्राचार्य आर सी मीणा ने उपायुक्त को भरोसा दिलाया कि आने वाले दिनों में पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नसीराबाद शिक्षा के क्षेत्र में नए और बेहतर आयामों को स्थापित करेगा। उप प्राचार्य राजेश बगड़िया ने उपायुक्त महोदय के प्रति आभार प्रकट किया एवं धन्यवाद व्यापित किया।

सुगंध दशमी पर्व मनाया

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

नसीराबाद। दिगंबर जैन धर्मावलंबियों की ओर से शुक्रवार को सुगंध दशमी पर्व श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर जैन धर्मावलंबियों ने नगर के सभी जैन मंदिरों में जाकर अग्नि में धूप समर्पित की। जिससे मंदिरों का वातावरण सुगंधमय हो गया। अपरान्ह बाद सभी जैन धर्मावलंबी रंग-बिरंगे परिधान पहनकर ढोल-ढमाकों के साथ जुलूस के रूप में नगर के सभी जैन मंदिर गए और मंदिरों में अपने परिवार के सदस्यों के साथ धूप समर्पित की। जैन समाज की कई महिलाओं ने सुगंध दशमी का उपवास भी किया।

मुनि श्री ससंघ के सानिध्य में आयोजित स्व धर्म साधना शिविर में उमड़े श्रद्धालु

फोटो : कुमकुम फोटो
साकेत 9829054966

मनाया उत्तम संयम धर्म, शनिवार को मनाएंगे उत्तम तप धर्म

जयपुर. शाबाश इंडिया

मानसरोवर के मीरामार्ग स्थित आदिनाथ भवन में चातुर्मास कर रहे अर्हम योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में गौखले मार्ग स्थित सामुदायिक केन्द्र सेक्टर 9 में शुक्रवार को दशलक्षण महापर्व का उत्तम संयम धर्म मनाया गया। इस मौके पर मुनि श्री के सानिध्य में चल रहे 10 दिवसीय स्वधर्म शिविर के छठें दिन उत्तम संयम धर्म की पूजा की गई। अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने बताया कि इससे पूर्व दस दिवसीय स्व धर्म शिविर प्रातः 5.30 बजे से 7.00 बजे तक उत्तम संयम धर्म पर अर्हं योग एवं ध्यान करवाया गया। शिविर में प्रातः 5.00 बजे से रात्रि 8.30 बजे तक आत्म साधना के साथ पूजा भक्ति के विशेष आयोजन किये गये। संयुक्त मंत्री सीए मनोज जैन के अनुसार शिविर में तत्वार्थ सूत्र का विधान प्रारंभ हुआ। मुनि श्री ने अपने प्रवचन में तत्वार्थ सूत्र के छठें अध्याय का प्रारम्भ करते हुए कहा कि यह अध्याय बिल्कुल छटां हुआ है। ऐसा आचार्य श्री विद्यासागर महामुनिराज कहते थे कि सभी ग्रहस्थों को यह अध्याय जरुर पढना चाहिए। इस अध्याय के 27 सूत्रों में आस्त्रव के कारण उनकी तीव्रता, भन्दना, अजीव व जीव अधिकरण के भेद, साता व असाता वेदनीय आस्त्रव के कारण, दर्शन चारित्र - मोहनीय चारित्र के बारे में बताया गया है। मुनि श्री ने कहा कि आज हर दार्शनिक कहता है कि मनुष्य शास्त्रों के अनुसार नहीं बना है परन्तु जैन धर्म कहता है कि इस संसार के सभी प्राणी शास्त्रों के अनुसार ही बने हैं। इस मौके पर 1500 से अधिक शिविरार्थियों ने अर्घ्य समर्पित किये। इससे पूर्व समाजश्रेष्ठी अजय, विजय, संजय कटारिया परिवार द्वारा धर्म सभा का दीप प्रज्जवलन व मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज के पाद पक्षालन एवं शास्त्र भेट किया गया। सायंकाल प्रश्न मंच, आरती, प्रतिक्रमण पाठ के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये। इस मौके पर समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील बैनाडा, उपाध्यक्ष तेज करण चौधरी, कोषाध्यक्ष लोकेन्द्र जैन राजभवन वाले, संयुक्त मंत्री सीए मनोज जैन, संगठन मंत्री अशोक सेठी, सांस्कृतिक मंत्री जम्बू सोगानी, अरुण श्रीमाल, एडवोकेट राजेश काला, अशोक गोधा, अशोक छाबड़ा, विजय झांझरी आदि ने सहभागिता निभाई। अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने बताया कि शनिवार 14 सितम्बर को मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में दशलक्षण महापर्व के दौरान उत्तम तप धर्म मनाया जाएगा इस मौके पर प्रातः 5.30 बजे से 7.00 बजे तक अर्हं योग ध्यान, 7 बजे से श्री जी का अभिषेक, शांतिधारा, तत्वार्थ सूत्र विधान होगा। प्रातः 9.00 बजे मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज के मंगल प्रवचन होगें। दोपहर में 1.30 बजे से धर्म की कक्षा, तत्वार्थ सूत्र प्रवचन, दशम धर्म कक्षा, सायंकाल 6.00 बजे से प्रश्न मंच, आरती, सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे।

उत्तम सत्य धर्म के दिन लघु नाटिका का हुआ मंचन

मनीष विद्यार्थी. शाबाश इंडिया

सागर। जैन मिलन मकरोनिया क्षेत्र क्रमांक 10 के द्वारा भगवान महावीर स्वामी के 2550 वे निर्वाण महोत्सव की श्रृंखला में दसलक्षण महापर्व पर उत्तम सत्य धर्म के दिन भगवान महावीर स्वामी के पंचकल्याणको के ऊपर से एक लघु नाटक का मंचन पाठशाला परिवार द्वारा वीराःमुक्ता जैन के निर्देशन एव मार्गदर्शन मे श्री चंद्र प्रभु दिगंबर जैन मंदिर रजाखेड़ी मकरोनिया में आयोजित किया गया जहां पत्रों ने भगवान महावीर स्वामी के जीवन पर आधारित गर्भ कल्याणक जन्म कल्याणक तप कल्याण ज्ञान कल्याणक एवं मोक्ष कल्याण की भव्य प्रस्तुतियां प्रस्तुत की जिसके आयोजक एवं प्रायोजक जैन मिलन मकरोनिया थे जिन्होंने सभी पात्रों को आकर्षित पुरस्कार दिए। इस अवसर पर वीर सुरेश जैन अध्यक्ष वीर रविंद्र जैन मंत्री अति वीर अरुण चंदेरिया क्षेत्रीय अध्यक्ष वीर हेमचंद जैन कार्यकारी अध्यक्ष वीर निशिकांत सिंघई प्रचार मंत्री वीर राजेश जैन संयुक्त मंत्री वीर शैलेंद्र जैन मंदिर अध्यक्ष वीर राजेश जैन शिक्षक उपमंत्री वीर अजीत जैन उपाध्यक्ष वीर मनीष जैन विद्यार्थी मीडिया प्रभारी वीर अरुण जैन कार्यकारिणी सदस्य वीर अरविंद जैन सांस्कृतिक मंत्री वीर डा सुदीप जैन वीर आर के जैन वीर मुकेश जैन वीर शैलेष जैन वीर कमलकांत जैन वीर वीरेंद्र जैन वीर आकाश जैन वीर महेश जैन वीर जिनेंद्र जैन वीरांगना मुक्ता जैन आरती जैन अर्चना जैन भारती जैन वर्षा जैन के साथ-साथ बड़ी संख्या में वीर ; वीरांगनाएं एवं समाज जन उपस्थित थे। मंच संचालन डॉक्टर सुदीप जैन एवं मुक्ता जैन द्वारा किया गया कार्यक्रम के अंत में सभी का आभार वीर रविंद्र जैन एवं वीर मनीष जैन विद्यार्थी एवं वीर निशिकांत सिंघई द्वाराअपने विचार व्यक्त करते हुए किया गया ।

वीर तेजाजी महाराज व रामदेव जी महाराज की विधिवत पूजा कर पदयात्रा रवाना

जयपुर. शाबाश इंडिया

खातीपुरा में वीर तेजाजी महाराज व रामदेव जी महाराज की विधिवत पूजा कर पदयात्रा रवाना करते हुए खातीपुरा व्यापार मंडल अध्यक्ष भवानी सिंह राठौड़, स्थानीय पार्षद वार्ड नंबर 38 हेरिटेज हेमेंद्र शर्मा, संगठन मंत्री भंवर लाल चौधरी, अमित चोपड़ा ने इस यात्रा में सभी को हाथों में झंडा दिया इस यात्रा में खातीपुरा क्षेत्र के सभी वर्ग स्त्रियां पुरुष व बच्चे पारंपरिक वेशभुषा में काफी संख्या में सम्मिलित हुए , सभी रामदेव जी महाराज और तेजाजी महाराज की पदयात्रा में जयकारो के साथ डीजे, ढोल, नगाड़े, शहनाई वादन कर खातीपुरा से झारखंड मोड होते हुए ग्रीन एवेन्यू, परिवहन नगर होते हुए शिव विहार स्थित तेजाजी के मंदिर पहुंचे और वहां पूजा अर्चना नारियल चढ़ाएं व तेजाजी के भजन कीर्तन नृत्य करते हुए जयकारा लगाते रहे ।

धूप खेपन से महके जिनालय, सुगंध दशमी का पर्व मनाया

नन्हे-मुन्ने बालकों ने बनाई मनमोहक झांकियां, शाम को श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी

टोंक. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन नसिया अमीरगंज टोंक में चल रहे दसलक्षण पर्व के तहत छठवें दिन सुगंध दशमी का पर्व बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया जिसमें शहर के सभी मंदिर एवं जिनालय में धूप खेपन का सिलसिला देर शाम तक चलता रहा जिससे सभी मंदिर धुप के खेपन से महक उठे इस मौके पर बालाचार्य निपूर्णनंदी जी महाराज के ससंघ सानिध्य में एवं दसलक्षण महामंडल विधान में बैठने वाले इंद्र इंद्राणी श्रावक संस्कार के शिवरार्थी श्री दिगंबर जैन नसिया से आदर्श नगर जैन मंदिर, बड़ा तख्ता जैन मंदिर ,काफला बाजार चेत्तालय में धूप खेपन का कार्यक्रम आयोजित किया गया इस अवसर पर टोंक जिलाप्रमुख सरोज नरेशबंसल,पूर्व सभापति लक्ष्मीदेवी जैन ,समाज के अध्यक्ष भागचंद फुलेता, राजेश सर्राफ, धर्मचंद दाखीया धर्मेंद्र जैन पासरोटियां ने बालकों के द्वारा बनाई गई मनमोहक झांकी फीता काटकर उद्घाटन किया और उनको उत्साहवर्धन किया। समाज के अंकुर पाटनी, ओम ककोड़, मुकेश बरवास ने बताया कि इससे पूर्व प्रातःकाल की बेला मेंअभिषेक, शांतिधारा, नित्य नियम पूजा के पश्चात दस लक्षण महामंडल विधान की पूजा की गई जिसमें सोलह कारणपूजा, पंचमेरु पूजा, दशलक्षण पूजा, सुगन्ध दशमी की पूजा आदि पंडित मनोज कुमार जी शास्त्री एवं सानिध्य में श्रीफल के अर्घ्य समर्पित किए गए इस मौके पर पंडित जी द्वारा उत्तम संयम धर्म के बारे में बताते हुए कहा कि श्प्रत्येक प्राणी को संयम में रहना चाहिए यह बात कहने में जितनी सरल है आप अपनाने में उतनी ही कठिन है विवेक पूर्वक कार्य करते हुए हिंसा आदि ना होने देना संयम कहलाता है पांचों इंद्रियों के विषयों को जीतना उत्तम संयम धर्म है सांस्कृतिक मंत्री विकासअत्तार ने बताया कि सायकाल को आरती ,प्रश्नमंच, स्वाध्याय, जिनवाणी का ज्ञान व शास्त्रसभा के पश्चात ''जैन हाहुजी प्रतियोगिता'' काआयोजन किया गया। इससे पूर्व गुरूवार को आर्यिका माताजी के जीवन परिचय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें महिलाओं ने बहुत ही सुंदर तरीके से जीवन परिचय पेश किया गया। समाज के मंत्री धर्मेंद्रजैन ने बताया कि 16 सितंबर सोमवार को मूलनायक आदिनाथ भगवान सहित 26 जिन प्रतिमाओं का प्रकट उत्सव मनाया जाएगा।

विषयेच्छा निरोध से मनुष्य भव की आदर्शता

इच्छा निरोध 'स्तप'

अन्तरंग 14 प्रकार के और बहिरंग 10 प्रकार के परिग्रहों का जहां अभाव हो जाता है उस परिणाम को उत्तम तप कहते हैं।

आचार्य उमा स्वामी महाराज श्री ने 'तत्वार्थसूत्र' में कहा, इच्छाओं का निरोध करना अर्थात दमन करना तप है। यह इच्छा निरोध तप तब तक नहीं हो सकता जब तक स्वभाव का अनुभव न किया जाए। स्वभाव के अनुभव के बाद उसका स्मरण रहता है, उसी और परिणाम रहा करते हैं। उस स्थिति में इच्छा का निरोध सहज हो जाता है। जो पर्याप्त संपत्ति ,वैभव, होने पर भी सात्विक रहन-सहन रखता है और निरंतर अविकारी स्वभाव का ध्यान रखता है वह घर में भी तप करता है । मनुष्य पर्याय का लाभ तप करने में है, इच्छा निरोध में है। मनुष्य के समान अन्य कोई उत्तम पर्याय नहीं है। इस मनुष्य रुपी चिंतामणि रत्न को पाकर विषयों की इच्छाओं का दास बना रहना मानो अपने सुख के मार्ग को रोक देना है। जब तीर्थंकर देव विरक्त होते हैं , तब उन्हें वन में ले जाने वाले इंद्र अपनी पुरानी आदत के अनुसार पालकी में बैठाकर उठाना चाहते हैं, तो मनुष्य उन्हें रोक देते हैं। कहते हैं, ₹ हे भाई तुम इस पालकी में हाथ नहीं लगा सकते यहां तुम्हारा अधिकार नहीं है ,तब इन्द्र कहते हैं- मैंने गर्भ में रत्न बरसाये, जन्मोत्सव में मेरु पर्वत पर अभिषेक किया ,मुझे अधिकार कैसे नहीं है? तब निर्णय के लिए एक वृद्धा को बिठाया गया। उस वृद्ध ने खूब सोच विचार कर यह निर्णय किया कि भाइयों भगवान की पालकी वह उठा सकता है जो भगवान के साथ भगवान जैसे संयम को धारण कर सके। यह बात सुनकर मनुष्य बड़े प्रसन्न हुए तब इन्द्र बोला कि मनुष्यों! मेरी इन्द्रत्व की सारी संपत्ति ले लो, सारा वैभव ले लो और इसके बदले मनुष्यत्व दे दो, परंतु इस आशा की पूर्ति कैसे हो सकती थी ?इंद्र रोता ही रहा, मनुष्य भव को ललचाता ही रहा। ऐसे अमूल्य नर रत्न को, क्षणिक पराधीन विषयास्वाद में गवां देना क्या हमारी मूर्खता नहीं होगी। जगत के सभी पदार्थ स्वतंत्र हैं। मैं भी स्वतंत्र ध्रुव चैतन्यमय वस्तु हूं। मेरा विश्व के साथ मात्र ज्ञेयज्ञायक संबंध हे, स्वस्वामी संबंध नहीं। इस प्रकार बाह्य से सर्वथा हटकर निज चैतन्य स्वभाव में बसना ''उत्तम तप'' है। यही सच्चा सम्यग्ज्ञान है। यह बात अच्छे से समझ में आ जानी चाहिए कि जगत एक गोरख धंधा है। इसकी चाहा उलझन की बढ़ोतरी है व चाह से दूर रहकर अपने स्वभाव में प्रतपन करने से अनंत आनंद का अविभाव है। इस सर्व सुख का मूल सम्यग्दर्शन है। जिस ज्ञानी के अन्तरंग बहिरंग दोनों प्रकार के परिग्रहों से रुचि हट गई उसके साथ यह परिग्रह कब तक रह सकते हैं। अतः जहां शुद्ध आत्मा के स्वभाव की रूचि होकर अन्तरंग 14 प्रकार के और बहिरंग 10 प्रकार के परिग्रहों का जहां अभाव हो जाता है उस परिणाम को उत्तम तप कहते हैं। यह तप वहीं प्रगट होता है जहां निर्ग्रन्थता है। ''तपसा निर्जरा च।'' तप से निर्जरा और संवर दोनों होते हैं। जिस प्रकार सोने को अग्नि में तपाकर शोधन किया जाता है, उसी प्रकार तप में दग्ध -आत्मा कर्म कालिमा से रहित कुंदन सी दमकने लगती है। कहने का तात्पर्य है कर्म रुपी कालिमा को तप रुपी अग्नि में स्वाहा करने से आत्मा कुंदन बन जाती है। फिर उसकी कीमत सोने, स्वर्ण भस्म की तरह हो जाती है। मनुष्य भव की सबसे बड़ी विशेषता है 'तप' जो अन्य जगह नहीं हो सकती। जिसे न तिर्यन्च कर सकते हैं, न नारकीय, न देव कर सकते हैं। तप का अधिकार केवल मनुष्य को है ।जब स्वर्ग में देवों को भूंख लगती है तो उनके कंठ से स्वतः अमृत झरता है । वह उसे रोक नहीं सकते ।इच्छा का निरोध नहीं कर सकते जबकि मनुष्य की इच्छा हुई तो वह उसे रोक सकता है, कंट्रोल कर सकता है। अपने आधीन है। इस प्रकार से मनुष्य तप करने में सक्षम है। इसलिए मनुष्य को अपनी शक्ति को नहीं छिपाना चाहिए। परिग्रह आदि का त्याग कर पांचों इंद्रियों को बस में कर के अपने को नियम- संयम में बांधकर तप करना चाहिए। तप में वो शक्ति है दुर्लभ से दुर्लभ वस्तु तप के द्वारा प्राप्त होती है। सम्यकदृष्टि का तप मुक्ति का कारण है और मिथ्यादृष्टि का तप संसार का कारण है। तप के समान आत्मा का हितकारी दूसरा और कोई नहीं है। इसलिए भव्यों को शक्ति के अनुसार तप करना चाहिए। सभी प्राणी स्वानुभव में आएं, उत्तम तप की साधना करें। यही मंगल भावना भाती हूं।

!! उत्तम तप धर्म की जय !!

अ.रा. समाजरत्न डॉक्टर अल्पना जैन
मालेगांव ,नाशिक महाराष्ट्र

श्रमण मुनि श्री विशल्यसागर ने कहा...

जीवन में बैलेन्स बनाए रखना ही संयम है

शाबाश इंडिया

श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर कानकी पश्चिम बंगाल में विराजमान श्रमण श्री विशल्यसागर जी मुनिराज ने चल रहे पर्यूषण पर्व 6 दिवस पर उत्तम संयम धर्म की व्याख्या करते हुए कहा कि जिस प्रकार नदी दो तटों के सहारे अपना मार्ग तय करती है उसी प्रकार आत्मा भी संयम के सहारे अपनी मंजिल को प्राप्त होती है। तट के अभाव में पानी सूखकर समाप्त हो जात है उसी प्रकार संयम के अभाव में जीव दुर्गतियों के चक्कर लगता है। आज तक संसार में जिन्होंने भी सफलता पायी जाती है, उन्होंने संयम का अवश्य ही सहारा लिया है। जब आकांक्षा का बीज आत्मा की भूमि पर पड़ता है। और पंचेन्द्रिय विषयों की खाद जैसे ही उस पर पड़ जाती है, तुरन्त वह बीज पनप जाता है और पाप वृत्तियों से समस्त आत्मा को जकड़ लेता है। तथा स्वच्छ आत्मा धीरे - धीरे जंगल का रूप धारण करने लगती है। इसलिए महावीर स्वामी ने कहा कि असंयम को जीवन में कहीं पर भी स्थान मत दो और इन्द्रिय संयम तथा संयम के तटों से चलकर परमात्मा के सागर में विलीन हो जाओ। अन्यथा चारों ओर पाप का जाल बिछा है। कब फँस गये, पता भी नहीं चलेगा फिर पछताते रह जाओगे, कोई छुड़ाने वाला भी नही मिलेगा । यह संयम वस्तु का पूर्ण निषेध तो नहीं करता पर भोग व भोग की सामग्री पर कंट्रोल अवश्य कराता है। यह बैलेन्स (संतुलन) बनाना सिखाता है। जैसे सर्कस मे रस्सी पर चलता हुआ नर दोनों तरफ बराबर भार बनाये रखता है और चलता है उसी प्रकार संयमी भी चलता है और आगे बढ़ जाता है।

प्रेषक विशाल पाटनी

गुदड़ी मंसूर खां जैन मंदिर में मनाया उत्तम संयम धर्म एवं सुगन्ध दशमी महापर्व

आगरा. शाबाश इंडिया

श्री शीतलनाथ दिगंबर जैन मंदिर गुदड़ी मंसूर खां में पर्यूषण महापर्व चल रहे हैं महापर्व के छठवें दिन शुक्रवार को उत्तम संयम धर्म एवं सुगंध दशमी महापर्व मनाया गया। जिसमें भक्तों ने भगवान शीतलनाथ का अभिषेक एवं शांतिधारा की। विधानचार्य रविंद्र जैन शास्त्री के कुशल निर्देशन में उपस्थित सभी भक्तों ने मंत्रोच्चारण के साथ उत्तम संयम धर्म एवं सुगंध दशमी की पूजन की क्रियाएं संपन्न कीं। विधानचार्य रविंद्र जैन शास्त्री ने उत्तम संयम धर्म के बारे में भक्तों को बताते हुए कहा कि मन पर संयम लाए बिना जीवन का कल्याण नहीं हो सकता है इस संयम धर्म कहते हैं दोपहर में सुगंध दशमी के अवसर पर रंगोली एवं रंग भरों प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें बड़ी संख्या में महिला में बच्चों ने भाग लियो सायःकाल 7:00 बजे 108 दीपकों से प्रभु शीतलनाथ की मंगल आरती कौइस अवसर पर वीरेंद्र जैन,नरेश जैन राकेश जैन पार्षद, सुभाष जैन,धर्मेंद्र जैन,संजय जैन, देवेंद्र जैन,अशोक जैन सुमन जैन सुशील जैन,अल्पना जैन सुनीता जैन समस्त गुदड़ी मंसूर खां जैन समाज के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। **रिपोर्ट शुभम जैन**

मानसरोवर महिला मंडल वरुण पथ द्वारा युगल नृत्य (रिश्तो की झंकार) का भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

महिला मंडल वरुण पथ मानसरोवर की अध्यक्ष डॉ. सुशीला टोंग्या द्वारा अवगत कराया गया की 12 सितंबर को वरुण पथ मंदिर में युगल नृत्य रिश्तों की झंकार में 17 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें मां -बेटी, बहने ,सास -बहू, देवरानी -जेठानी, फ्रेंड्स आदि ने अपने नृत्य में जुगलबंदी के साथ भव्य प्रदर्शन किया। **मंच का संचालन श्रीमती शशि सेन जैन ने किया:** कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलन से हुई जिसमें वीरेंद्र प्रेमलता ने दीप प्रज्जवलित किया मुख्य अतिथि राजकुमार राजकुमारी व अन्य प्रमुख अतिथियों का स्वागत सत्कार किया। युगल नृत्य प्रतियोगिता के निर्णायक श्रीमती अपूर्वा जैन व श्रीमती उपमा जैन ने अपने निर्णय सुना कर प्रथम पुरस्कार जया जैन व मानवी जैन को द्वितीय पुरस्कार आभा जैन व नीलिमा जैन और तृतीय पुरस्कार अंजू शाह व अवनी शाह और पूर्णिमा सेठी व रियांशी सेठी को नवाजा गया। दिगंबर जैन महासमिति राजस्थान अंचल के पर्यवेक्षक टीम ने पूरे प्रोग्राम का रसास्वादन कर आनंद उठाया एवं कार्यक्रम की भूरि भूरि प्रशंसा की। मंडल के सभी पदाधिकारी श्रीमती चंद्रकांता जी छाबड़ा, मिथिलेश जी गोधा ,शशि सेन जैन, हीरामणि जी छाबड़ा, वीणा जी जैन ,हिमानी जी जैन व कार्यक्रम की संयोजिका नीतू पाटनी व श्वेता बाकलीवाल ने सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

दसलक्षण महापर्व में उत्तम संयम धर्म का हुआ विशेष आयोजन

कुलचारम, हैदराबाद. शाबाश इंडिया

दसलक्षण महापर्व के छठवें दिन को उत्तम संयम धर्म के रूप में हर्षोल्लास से मनाया गया। तेलंगाना के मेदक जिले में स्थित श्री 1008 विघ्नहर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, कुलचारम में चल रहे चातुर्मास के दौरान साधना शिरोमणि अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्नसागरजी महाराज के आशीर्वाद से इस विशेष दिन का आयोजन किया गया। उपाध्याय श्री 108 पियूष सागरजी महाराज के निर्देशन में भक्तों ने संयम धर्म की महत्ता को समझा और पालन किया। इस पवित्र अवसर पर दिन की शुरूआत प्रातःकालीन पूजा से हुई। इसके बाद, 24 तीर्थंकरों की जिनआराधना और भगवान पार्श्वनाथ का मंगल अभिषेक संपन्न हुआ। भक्तों ने इस धार्मिक आयोजन में गहरी श्रद्धा और भक्ति के साथ भाग लिया। संयम धर्म के प्रति समर्पण और तप की भावना को जागृत करते हुए कई श्रावकों ने उपवास और व्रत का पालन किया। उपवास व्रत साधना के अंतर्गत, इस दिन विशेष रूप से मुक्तावली व्रत का समापन उपाध्याय श्री पियूष सागरजी महाराज और मुनि श्री 108 परिमल सागरजी महाराज के नेतृत्व में हुआ। इसके साथ ही, त्रिलोक सार व्रत कर रहे गुरुदेव अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्नसागरजी महाराज का भी महापारणा संपन्न हुआ। इस अवसर पर सैकड़ों गुरुभक्तों ने पारणा का लाभ प्राप्त किया और व्रतधारियों को धार्मिक अनुष्ठानों के पश्चात, गौग्रास सेवा और बंदर ग्रास किया गया, जिसमें हर्ष और उत्साह के साथ । संयम धर्म की पूजा विधि और तत्त्वार्थ सूत्र पर अंतर्मना आचार्य श्री के मुखारविंद से विशेष वचन हुए, जिनमें संयम के महत्व और उसकी जीवन में आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। मध्यान्ह में प्रवर्तक मुनि श्री सहज सागरजी महाराज द्वारा तत्त्वार्थ सूत्र का वाचन और गुरुपूजन हुआ। संयम धर्म के प्रति जागरूकता फैलाने और इसे जीवन में अपनाने की प्रेरणा देने के लिए ये अत्यंत प्रभावशाली रहे। दिन के अंतिम चरण में संध्याकाल में श्रावक प्रतिक्रमण का आयोजन हुआ, जिसमें भक्तों ने अपने दिन भर के विचारों और कार्यों की समीक्षा की। इसके बाद गुरुभक्ति के भावपूर्ण प्रवचन और 24 तीर्थंकरों के नाम व चिन्हों के माध्यम से संयम धर्म की महत्ता को समझाया गया। अंत में, मंगल आरती के साथ इस पावन दिवस का समापन हुआ, जिसमें सभी भक्तों ने संयम और अनुशासन को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने का संकल्प लिया। इस प्रकार, उत्तम संयम धर्म का यह विशेष दिन भक्तों के लिए आध्यात्मिक उन्नति और आत्मसंयम के संदेश को फैलाने वाला सिद्ध हुआ।

नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल औरंगाबाद

सुगन्ध दशमी पर 17 से अधिक दिगम्बर जैन मंदिरों में सजी जैन दर्शन को दर्शाती संदेशात्मक एवं ज्ञानवर्धक झांकियां

मंदिरों में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी-राजस्थान जैन युवा महासभा की टीमों ने किया अवलोकन

आदर्श नगर के श्री मुल्तान दिगम्बर जैन मंदिर में चक्रवर्ती की शंका केवल द्वारा समाधान झाकी

आधारित ज्ञान वर्धक तथा संदेशात्मक झांकियां सजाई गई। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर की टीमों द्वारा सभी झांकियों का अवलोकन किया गया। युवा महासभा द्वारा सभी झाकियो को अक्टूबर माह में समारोह आयोजित कर सम्भागवार एवं जिला स्तर पर पुरस्कृत किया जाएगा। राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन एवं प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि शुक्रवार ,13 सितम्बर को सुगन्ध दशमी के मौके पर मंदिरों में श्रद्धालुगणों द्वारा मंदिरों में अष्ट कर्म के नाश करने के लिए अग्नि पर धूप खेई गई। शहर के 17 से अधिक दिगम्बर जैन मंदिरों में जैन दर्शन, जैन तीर्थंकरों के जीवन चरित्र पर आधारित ज्ञान वर्धक तथा संदेशात्मक

बापूनगर के गणेश मार्ग स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में सजी नन्दीश्वर द्वीप की झांकी

महावीर नगर के दिगम्बर जैन मंदिर में कड़ियां कर्मो की झांकी

वात्सल्य मूर्ति पूज्य उपाध्याय 108 श्री ऊर्जयन्त सागर जी मुनिराज के पावन सानिध्य में प्रताप नगर सेक्टर 8 जयपुर में सज्जित विमल समाधि मंदिर झांकी के दृश्य।

श्रेष्ठ झांकियों को राजस्थान जैन युवा महासभा अक्टूबर माह में करेगी पुरस्कृत

जयपुर. शाबाश इंडिया

सुगन्ध दशमी के मौके पर रविवार को शहर के 17 से अधिक दिगम्बर जैन मंदिरों में जैन दर्शन, जैन तीर्थंकरों के जीवन चरित्र पर झांकियां सजाई गई। मंदिरों पर बिजली की विशेष सजावट की गई। बडी संख्या में जैन बन्धुओं ने झांकियो का अवलोकन किया। देर रात्रि तक दिगम्बर जैन मंदिरों के बाहर भीड जुटी रही। झांकियां देखने के लिए कई मंदिरों में लम्बी लम्बी लाईने लग गई। प्रदीप जैन एवं विनोद जैन कोटखावदा के मुताबिक युवा महासभा के सिटी सम्भाग (चार दीवारी) में मनिहारो का रास्ता स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर बडा दीवान जी में महिला जागृति संघ द्वारा 'राजमहल से जंगल की ओर', सजीव झांकी सजाई गई। जवाहर नगर - मालवीय नगर सम्भाग में सिद्धार्थ नगर के श्री दिगम्बर जैन मंदिर महावीर स्वामी (खण्डाकान) में "जैन धर्म" आदिनाथ काल से वर्तमान तक, बापूनगर के गणेश मार्ग स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में 'नन्दीश्वर द्वीप', ज्ञान तीर्थ टोडरमल स्मारक ट्रस्ट में 'संस्कार', जवाहर नगर के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में 'नवग्रह जिनालय' तथा आदर्श नगर के मुल्तान दिगम्बर जैन मंदिर में 'भरत चक्रवर्ती के सोलह सपनें' की झाकी सजाई गई। मानसरोवर - टोंक रोड सम्भाग में टोंक फाटक के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर मधुवन में 'जैन धर्म का भविष्य', गोपालपुरा बाईपास पर शक्तिनगर के श्री चन्द्रप्रभू दिगंबर जैन पल्लीवाल मंदिर में 'अर्हं योग एवं ध्यान', अग्रवाल फार्म के थड़ी मार्केट स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में 'अहिंसक आहार', ', कीर्ति नगर के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में वन्डरफुल जैनिज्म - वैभव जैनत्व का, महावीर नगर के श्री दिगम्बर जैन मंदिर में' कड़ियाँ कर्मों की', सजीव झांकी सजाई गई।

झोटवाडा सम्भाग में

पटेल नगर के श्री चन्द्र प्रभू दिगम्बर जैन मंदिर में 'तीर्थराज सम्मेद शिखर जी' एवं कालवाड रोड पर मंगलम सिटी के श्री मुनिसुव्रत नाथ दिगम्बर जैन मंदिर में 'महावीर के पांच कल्याणक' की झांकी सजाई गई।

इसी प्रकार से सांगानेर संभाग में महल योजना के श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में 'कर्मों की सांप सीढी', श्योपुर प्रतापनगर के श्री चन्द्रप्रभू दिगम्बर जैन मंदिर में 'पाप से बचे' एवं प्रतापनगर के सैक्टर 17 स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में 'एक अन्तर्यात्री की यात्रा - संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महामुनिराज', प्रतापनगर के सैक्टर 8 स्थित श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में आचार्य विमल सागर महाराज की समाधि स्थली सम्मेद शिखर जी की सजीव झांकी सजाई गई।

राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन, प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि युवा महासभा की 51 सदस्यीय 6 टीमों द्वारा झांकियों को सम्भागवार एवं जयपुर स्तर पर पुरस्कृत करने हेतु अवलोकन किया गया। जयपुर स्तरीय टीम में प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन, प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा, जयपुर जिला अध्यक्ष संजय पाण्डया, जिला महामंत्री सुभाष बज, यशकमल अजमेरा, मनीष बैद सहित कई गणमान्य लोग शामिल हुए।

काय छहों प्रतिपाल, पंचेंद्रीय मन वश करो, संजम रतन संभाल, विषय चोर बहु फिरत है: प्राचार्य सतीश

जयपुर. शाबाश इंडिया

नेमीसागर कालोनी स्थित जैन मंदिर में दसलक्षण महापर्व के छठे दिन उत्तम संयम धर्म विधान की पूजन की गई। इस अवसर पर प्राचार्य सतीश जैन ने संयम धर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बिना संयम का प्राणी बिना ब्रेक की गाड़ी के समान होता है और जिसने संयम धारण कर लिया उसका जीवन सुधर जाता है। अध्यक्ष जे के जैन कालाडेरा ने बताया कि आज के पूजन स्थापना के पुण्यार्जक पदम चंद तारा देवी पहाड़िया एवं परिवार रहे। साथ ही श्री दिगंबर जैन भाग्योदय अतिशय क्षेत्र रेवासा के रविवार दिनांक 22 सितंबर 2024 को होने वाले वार्षिक मेले के पोस्टर का विमोचन भी समाज के गणमान्य जनों द्वारा किया गया। सायकालीन आरती के पुनयार्जक श्री अशोक किरण झांझरी एवं परिवार रहा। साथ ही सुगंध दशमी के शुभ अवसर पर आरती सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके पुन्यार्जक श्री कैलाश चंद जैन उर्मिला देवी परिवार रहे। इस प्रतियोगिता में समाज के सभी बंधुओ ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

भगवान आदिनाथ की राजमहल से जंगल की ओर सजीव झांकी को देख अभिभूत

जयपुर. शाबाश इंडिया। महिला जागृति संघ द्वारा सुगंध दशमी के अवसर पर बड़े दीवान जी के मंदिर मनिहारों का रास्ता में ''राजमहल से जंगल की ओर' सजीव झांकी को जैन धर्मावली देख हुए अभिभूत। संस्था अध्यक्ष शशि जैन ने बताया कि नाभिराय मरु देवी के नंदन आदि कुमार के जन्म के 15 महीने पहले ही कुबेर द्वारा रतन की वर्षा होने लगती है। सौंधर्म इंद्र के आदेश से दिक्कुमारियां माता की सेवा में रहती है, अयोध्या में जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

सौंधर्म इंद्र बालक को उठाकर सुमेरु पर्वत पर ले जाकर पांडू शिला पर उसका अभिषेक करते हैं। उसका रूप सौंदर्य देखने के लिए 1000 आंखें करके देखते हैं और तांडव नृत्य करते हैं आदि कुमार धीरे-धीरे बड़े होते हैं राज शासन संभालते हैं, 83 लाख वर्ष पूर्ण होने पर जब उनका जन्म उत्सव मनाया जाता है, जिसकी आयु कुछ क्षण ही बची थी नीलांजना की मृत्यु के बाद उसी क्षण सौधर्म दूसरी वैसी नीलांजना को खड़ी कर देते हैं उनका मन संसार से विरक्त हो जाता है और वह जैनेश्वरी दीक्षा के लिए वन की ओर निकल जाते हैं कठोर तप करके केवल ज्ञान प्राप्त करके वह मोक्ष को प्राप्त करते हैं। संस्था सचिव बेला जैन ने बताया कि सजीव झांकी में शारदा सोनी रेखा गोधा,कुसुम ठोलिया, संभव जैन, निर्मला गंगवाल, दीपिका गोधा, ज्योति छाबड़ा, गरिमा, काशवी जैन, भवयी जैन, निर्मला वेद, प्रेमलता ने अपने अभिनय से सभी को अभिभूत और भावुक कर भगवान आदिनाथ की महिमा का बखान किया ।